



मुख्यमंत्री निवास पर सामूहिक क्षमावाणी आयोजन के दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जैन मुनियों व आचार्यों से अशीर्वाद लिया।

मुख्यमंत्री ने निवास पर सामूहिक क्षमावाणी कार्यक्रम आयोजित किया

दिगम्बर और श्वेताम्बर मुनियों के एक साथ पर्व मनाने की मुनियों ने सराहना की

जयपुर, 6 अक्टूबर। रविवार को मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित जैन धर्म के सामूहिक क्षमावाणी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि भगवान ऋषभदेव से लेकर भगवान महावीर तक सभी जैन तीर्थंकरों ने सदैव अहिंसा एवं क्षमा का संदेश दिया है। उन्होंने कहा कि भारत के सभी धर्मों में अहिंसा एवं क्षमा को विशेष महत्व दिया गया है तथा जैन धर्म ने इसे नई पहचान प्रदान की। उन्होंने कहा कि जैन धर्म में अहिंसा और क्षमा सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवों तक विस्तृत है तथा यह सिद्धांत विश्वशांति की ओर ले जाने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। जैन धर्म के पूज्य जनों का एक साथ आना राजस्थान की जनता के लिए एक सुन्दर संदेश है।

- मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत के सभी धर्मों में अहिंसा और क्षमा को विशेष महत्व दिया गया है तथा जैन धर्म ने इसे नयी पहचान प्रदान की है।
- इस समारोह में आचार्य शंशाक सागर, आचार्य विश्वरत्न सागर, मुनिपवन सागर, मुनि तत्वरुचि, मुनि सत्यक रत्न विजय तथा साध्वी श्रुत दर्शना ने आशीर्वाद दिया।

उन्होंने कहा कि जैन तीर्थंकरों ने दुनिया को सत्य, अहिंसा और अपरिग्रह के सिद्धांतों के माध्यम से मार्ग दिखाया, जिससे हमारी संस्कृति और विचार वर्तमान समय में भी पूरी दुनिया में प्रसिद्ध हैं। साधु-मुनियों की वाणी ईश्वरीय रूप होती है, जिनके आशीर्वाद से भारत दुनिया में अपनी पहचान बनाए हुए है तथा 21वीं सदी

में विकसित भारत के रूप में दुनिया की महाशक्ति बनेगा। शर्मा ने कहा कि जैन धर्म के आस्था स्थलों के विभिन्न विकास कार्य किए जा रहे हैं। इसी क्रम में रणकपुर जैन मन्दिर के सौन्दर्यीकरण एवं सुविधाएँ विकसित करने तथा निसियाँ जी विराटनगर में श्रद्धालुओं की सुविधा एवं विकास कार्य करवाये

जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में निवेश को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार राजजिग राजस्थान का आयोजन करने जा रही है। उन्होंने व्यवसायियों से राजजिग राजस्थान समिटि में अपनी भूमिका निभाने का आह्वान किया। कार्यक्रम में आचार्य शंशाक सागर महाराज ने कहा कि राजस्थान में पहली बार इस तरह का आयोजन किया जा रहा है। यह सुन्दर क्षण है कि यहां दिगम्बर और श्वेताम्बर मुनि एक साथ क्षमावाणी समारोह मना रहे हैं और यही भगवान महावीर का एकता का संदेश है। आचार्य विश्वरत्न सागर महाराज ने कहा कि मुख्यमंत्री निवास पर सामूहिक क्षमावाणी की यह पहल सराहनीय है। मुनि अर्चित सागर (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बिहार में 6 बच्चों की मौत

डेहरी आन सोन, 06 अक्टूबर। बिहार में रोहतास जिले के रोहतास थाना क्षेत्र में रविवार को सोन नदी में छह बच्चों की डूबकर मौत हो गयी तथा एक बच्ची लापता हो गयी।

पुलिस सूत्रों ने यहां बताया कि तुंबा गांव में सोन नदी में सात बच्चे स्नान कर रहे थे। इस दौरान सभी गहरे पानी में डूब

- रोहतास जिले के तुंबा गांव में सोन नदी में स्नान के दौरान यह हादसा हुआ। बच्चे गहरे पानी में डूब गए।

गये। घटना में छह बच्चों की डूबकर मौत हो गयी जबकि एक बच्ची लापता हो गयी।

सूत्रों ने बताया कि मृतकों की पहचान तुंबा गांव निवासी अमय कुमार (10), विवेक कुमार (12) राजू कुमार (12), शारखंड के रांची निवासी नंद किशोर गौड़ के पुत्र पवन कुमार (07), पुत्री निधि कुमारी (12), और गुनगुन कुमारी (08) के रूप में की गयी है। इस घटना में नंद किशोर गौड़ की एक और पुत्री नाय्या कुमारी लापता है, जिसकी तलाश की जा रही है। शवों को पोस्टमॉर्टम के लिये भेज दिया गया है।

राम पर अमर्यादित टिप्पणी करने वाले को जेल भेजा

फिरोजाबाद, 06 अक्टूबर। उत्तर प्रदेश में फिरोजाबाद जनपद के थाना नगला खंगर क्षेत्र निवासी एक युवक द्वारा सोशल मीडिया पर भगवान राम पर अशोभनीय टिप्पणी की गई थी। पुलिस ने रविवार को कार्रवाई करते हुए उसे

- फिरोजाबाद के इस युवक ने सोशल मीडिया पर भगवान राम पर अशोभनीय टिप्पणी की थी।

गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

थाना नगला खंगर के प्रभारी गिरीश कुमार के अनुसार, युवक पृथ्वीराज पुत्र विनोद कुमार, द्वारा नए सोशल मीडिया पर भगवान राम के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी की गई थी। पुलिस विभाग के सोशल मीडिया सेल ने कार्रवाई करते हुए युवक पृथ्वीराज को चिन्हित करके रविवार को गिरफ्तार कर लिया है, जिसके खिलाफ वैधानिक कार्रवाई कर जेल भेजा जा रहा है।

“महाकुंभ के दौरान मांस-मदिरा की बिक्री नहीं होगी”

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रयागराज दौरे में यह निर्णय लिया

प्रयागराज, 06 अक्टूबर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आज रविवार को प्रयागराज दौरे पर रहे और महाकुंभ को लेकर चल रही तैयारियों का जायजा लिया। इसके साथ ही उन्होंने कुंभ के “लोगो” का उद्घाटन भी किया। इस मौके पर योगी ने कहा कि अगले साल जनवरी में आयोजित होने वाले महाकुंभ के दौरान यहां मांस-मदिरा की बिक्री नहीं होगी। उन्होंने 13 अखाड़ों, खाक चौक, दंडी बाड़ा और आचार्य बाड़ा के प्रतिनिधियों के साथ महाकुंभ को लेकर एक बैठक भी की।

प्रदेश सरकार की ओर से जारी एक विज्ञापन के अनुसार, सीएम ने बैठक में कहा कि साधु-संतों, संन्यासियों व वैरागियों सहित समस्त सनातन समाज की भावनाओं का सम्मान रखते हुए प्रयागराज की शास्त्रीय सीमा में मांस-मदिरा का क्रय-विक्रय प्रतिबंधित किया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि पवित्र नदियों की स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए सरकार के स्तर पर प्रयास किये जा रहे हैं, लेकिन साधु-संत समाज का भी सहयोग अपेक्षित है। योगी

- योगी आदित्यनाथ ने साधु-संतों, संन्यासियों और वैरागियों से महाकुंभ आयोजन में सहयोग करने की अपील की।

ने यह भी कहा कि महाकुंभ के दौरान ब्रह्मलीन होने वाले साधु-संतों की समाधि के लिए प्रयागराज में शीघ्र ही भूमि आरक्षित कर दी जाएगी।

इसके अलावा संत समाज की ओर से गो-हत्या पर प्रतिबंध की मांग पर योगी ने कहा, उत्तर प्रदेश में गोहत्या अपराध है। गोहत्या के विरुद्ध उम्रकैद तक की सजा का प्रावधान है। इसके साथ ही, राज्य सरकार सात हजार से अधिक गोवंश आश्रय स्थल का संचालन कर रही है, जहां 14 लाख से अधिक गोवंश संरक्षित हैं। योगी ने सभी संतों-संन्यासियों व आचार्यों से अनुरोध किया कि वह अपने आश्रम में तब तक किसी को प्रवास की अनुमति न दें जब तक उनका विधिवत सत्यापन न हो जाए।

सारे जतन के बाद भी पैथर सर्च टीम की पकड़ से दूर

सवाल यह है कि पैथर जगह बदल रहा है या अलग-अलग पैथर हमला कर रहे हैं

उदयपुर, (कासं)। गोमुंदा और बड़गांव के जंगलों में वन विभाग और प्रशासन ने पैथर को खोजने के लिए सारे जतन कर लिए हैं, लेकिन पैथर अब तक उनकी पहुंच से दूर है। एक ही पैथर जगह बदल रहा है या अलग-अलग पैथर हमला कर रहे हैं, इसे लेकर संशय की स्थिति बनी हुई है। वन विभाग का दावा है कि जहां शिकार किया है वहां पैथर वापस जरूर आया।

गोमुंदा थाना प्रभारी शैतान सिंह के अनुसार उनकी टीम जंगल में जहां-जहां गई वहां किसी तरह का जानवर नजर नहीं आया। उन्होंने बताया कि पुलिस प्रशासन द्वारा पैथर से सुरक्षा हेतु ग्रामीणों को जागरूक करने के लिए समझाइश का अभियान भी चलाया जा रहा है।

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गोपाल स्वरूप मेवाड़ा एवं पुलिस उप अधीक्षक गजेन्द्र सिंह राव के सुपरविजन में ए एस आई विनेश कुमार के नेतृत्व में हेड कॉन्स्टेबल चरण सिंह, कॉन्स्टेबल राजेंद्र सिंह, सांवाला राम की टीम ने रविवार को गोमुंदा पंचायत के भेवाडिया, छाली, उमरिया, कुण्डाल, मजाम, मजाबद, बागडुदा, निलय बावड़ी आदि नए ग्रामीणों से सम्पर्क कर समाजशास्त्री की। इधर प्रशासन अब अधिक आवाजाही वाले आबादी क्षेत्र से बेस कैंप को हटाने की तैयारी कर रहा है। ऐसी जगह बेस कैंप स्थापित करने पर विचार किया जा रहा है जहां पर लोगों की आवाजाही आसान नहीं हो। इसके अलावा ट्रैप कैमरों की संख्या बढ़ाकर 50 कैमरे लगा दिए गए हैं। पैथर ने

- बेस कैंप को आबादी से दूर शिफ्ट किया जा रहा है। ट्रैप कैमरों की संख्या बढ़ाकर 50 कर दी गई है।

- रविवार को सुबह 11:30 बजे पिण्डवाड़ा नेशनल हाईवे पर गोमुंदा के भादवी गुडा के पास पैथर देखा गया।

स्कूल के समीप ही एक शिकार किया था इसलिए उसके दोबारा आस-पास आने की संभावना है, लेकिन लोगों की आवाजाही अधिक होने के कारण पांच दिन गुजरने के बाद भी यहां पैथर का मूवमेंट नहीं देखा गया है। डी.एफ.ओ. मुकेश सैनी के अनुसार राठौड़ों का गुडा के सरकारी स्कूल में बेस कैंप बनाया गया है। स्कूल में पुलिस की 100 से अधिक लोगों की टीम भी सक्रिय रूप से काम कर रही है। एएसपी गोपाल स्वरूप मेवाड़ा भी विगत दो दिन से राठौड़ों का गुडा में सर्च ऑपरेशन में लगी पुलिस को लीड कर रहे हैं। इधर पिंडवाड़ा नेशनल हाईवे 27 पर गोमुंदा के भादवी गुडा के उपला भीलवाड़ा के समीप रविवार सुबह करीब (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

चेन्नई एयर शो में भगदड़ से तीन की मौत

चेन्नई, 06 अक्टूबर। चेन्नई में 8 अक्टूबर को भारतीय वायुसेना के 92वें स्थापना दिवस से पहले रविवार को चेन्नई में एयर शो हुआ। इसे देखने के लिए मरीना बीच पर लाखों की संख्या में लोग जमा हुए। भारी भीड़ और गर्मी के चलते तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि 200 से ज्यादा लोग बेहोश हो गए। मृतकों की पहचान श्रीनिवासन (48), कार्तिकेयन (34) और जॉन (56) के नाम से हुई है।

इस एयर शो को देखने के लिए लगभग 13 लाख लोगों की भीड़ जुटी थी, इसके चलते इसका नाम लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल हो गया है। यह शो सुबह 11 बजे शुरू हुआ

- एयर शो को देखने 13 लाख लोगों की भीड़ मरीना बीच पर इकट्ठी हुई थी। गर्मी और प्यास के बाद जाम लगने से हुई भगदड़ में तीन की मृत्यु हो गई।

और दो घंटे तक चला। हालांकि, लोग 8 बजे से ही मरीना बीच पर जुटने लगे थे। इस दौरान तापमान 36 डिग्री तक पहुंच गया था।

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक एयर शो देखने गए लोगों ने बताया कि बीच पर पीने के पानी की भी व्यवस्था नहीं थी। लोगों घंटों तक प्यासे बैठे रहे। एक बच्चे को खतम होने के बाद एक साथ लोग वहां से निकले जिसके चलते रास्तों पर ट्रैफिक जाम हो गया। भारी भीड़ के चलते एक लोकल रेलवे स्टेशन पर भगदड़ मच गई। अलग-अलग मेट्रो स्टेशन पर भी ऐसी ही भीड़ देखने को मिली।

मैनपुरी जिला जेल में महिला कैदी ने फांसी लगाई

मैनपुरी, 06 अक्टूबर। उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिला जेल में महिला कैदी ने रविवार को शाम टॉयलेट में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। इस घटना से जेल प्रशासन में हड़कंप मच गया। पुलिस के अनुसार, बिडवां थाना

- इस घटना से जेल प्रशासन सकते में हैं। महिला कैदी को अपने पति की हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था।

क्षेत्र के ग्राम देवगंज निवासी लाली राजपूत (28) पति की हत्या की आरोपी थी।

24 जुलाई को बिडवां थाना पुलिस ने लाली राजपूत को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। लाली पर अपने पति धर्मेश राजपूत की हत्या का आरोप था। रविवार की शाम लाली महिला (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

लालू, तेजस्वी, तेजप्रताप आज दिल्ली कोर्ट में पेश होंगे

“जमीन के बदले नौकरी” में ई.डी. की सप्लीमेंट्री चार्जशीट के बाद तीनों के सम्मन निकले थे

पटना, 06 अक्टूबर। जमीन के बदले नौकरी मामले में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय जनता दल प्रमुख लालू प्रसाद यादव को मुश्किलें कम नहीं हो रही हैं। यादव और उनके दोनों बेटे तेजस्वी यादव और तेजप्रताप यादव सोमवार को दिल्ली के राजज एवेन्यू कोर्ट में पेश होंगे। ईडी ने इस मामले में सप्लीमेंट्री चार्जशीट दाखिल की थी, जिसके आधार पर कोर्ट ने तीनों को समन भेजा था। यादव और उनके परिवार के सदस्यों पर भारतीय रेलवे में

नौकरियों के बदले जमीन के रूप में अवैध लाभ अर्जित करने का आरोप है। लालू यादव पटना से एयर इंडिया के विमान से दिल्ली के लिए रवाना हो गए हैं। लालू प्रसाद यादव के साथ उनकी बेटी रोहिणी और मौसा भारती भी थीं। तेजस्वी यादव भी पेशी के लिए अपने विदेश दौरे से दिल्ली लौट आए हैं।

इस मामले में तेजप्रताप यादव पहली बार कोर्ट में पेश होंगे। अदालत ने पिछली सुनवाई के दौरान कहा था कि अदालत को प्रथम दृष्टया और समन के

- कोर्ट में हाजिर होने के लिये लालू यादव पटना से दिल्ली विमान से रवाना हुए।

चरण में आवश्यक जांच के मानक के मद्देनजर यह निष्कर्ष निकालने के लिए बाध्यकारी आधार मिलता है कि तेज प्रताप यादव भी अधिग्रहण और अपराध की आय को छिपाने में शामिल थे और

इस प्रकार वर्तमान पूरक शिकायत पर तलब किए जाने के लिए उत्तरदायी हैं। ईडी ने लालू प्रसाद यादव पर अपराध से अर्जित आय के अधिग्रहण को छिपाने के लिए अपने परिवार के सदस्यों और सहयोगियों के साथ अपराधिक साजिश रचने का आरोप लगाया है।

एजेन्सी ने आरोप लगाया कि जब प्रसाद रेल मंत्री थे, तब मुख्य रूप से पटना के महोआ बाग में जमीन मालिकों को रेलवे में नौकरियां देने के वादे के

साथ कम कीमत पर अपनी जमीन बेचने के लिए राजी किया गया था।

ईडी ने आरोप लगाया था कि इनमें से कई भूखंड पहले से ही यादव परिवार के पास मौजूद जमीन के पास स्थित थे। इस मामले में सात में से छह भूखंड राबड़ी देवी से जुड़े थे और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त किए गए थे।

ईडी ने कहा था कि यह मामला 2004 से 2009 तक रेल मंत्री के रूप में प्रसाद के कार्यकाल के दौरान मध्य (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

धर्मशाला में दो जगह बम फटे, 22 घायल

धर्मशाला, 06 अक्टूबर। हिमाचल प्रदेश के जिला मुख्यालय धर्मशाला में रविवार दोपहर बाद दो जगह बम फटने से 22 लोग घायल हो गये। दोपहर बाद आतंकी घटना की सूचना मिलने के बाद कांगड़ा पुलिस, एसडीआरएफ और नेशनल सिविलरिटी गार्ड (एनएसजी) ने स्थिति

- सुरक्षा एजेंसियों ने मोर्चा सम्भाला।

व मोर्चा संभाल लिया। जानकारी के अनुसार दोपहर बाद करीब दो बजे आयुर्वेदिक अस्पताल धर्मशाला में हमले की सूचना मिली जिसके बाद राहत एवं बचाव कार्य तथा जांच के लिए टीमें मौके पर पहुंचीं। इसी दौरान गांधी चौक में भी हमले की सूचना (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

फसल अवशेष प्रबन्धन के तहत मशीनरी के लिए 50 से 80 प्रतिशत सब्सिडी दी जाएगी

नई दिल्ली, 06 अक्टूबर। सर्दियों का मौसम शुरू होने और रबी की फसलों की बुवाई शुरू होने से पहले खेतों को तैयार करने के लिए पराली जलाना शुरू कर देते हैं। इससे हर साल गंभीर प्रदूषण की समस्या सामने आती है। पंजाब सरकार ने पराली से होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए “फसल अवशेष प्रबंधन ऋण योजना” शुरू की है। इसके तहत किसानों को मशीनों मुहैया कराने के लिए 50 से 80 प्रतिशत सब्सिडी दी जाएगी। मुख्यमंत्री भगवंत

मान ने किसानों से इस योजना का लाभ उठाने की अपील की है।

भगवंत मान ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा है- पराली जलाने से होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए हमारी सरकार प्रतिबद्ध है। पराली निपटाने के लिए किसानों को 50 से 80 प्रतिशत सब्सिडी पर मशीनरी उपलब्ध करवाने के लिए अवशेष प्रबंधन ऋण योजना” शुरू की गई है। सभी किसान भाइयों से अनुरोध है कि इस लाभकारी

- पराली जलाने से होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए सहकारी बैंक पूरे राज्य में किसानों को यह ऋण व सब्सिडी उपलब्ध करायेंगे।
- दिल्ली के पास एन.सी.आर. रीजन में बायो-डीकंपोजट घोल का छिड़काव खेतों पर किया जा रहा है।

योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाएं। फसल अवशेष प्रबंधन से सिर्फ प्रदूषण ही नहीं नियंत्रित नहीं होता बल्कि

इससे मिट्टी को अधिक उपजाऊ बनाने में भी मदद मिलती है। फसलों के अवशेषों का प्रबंधन करने से मिट्टी की भौतिक अवस्था में सुधार होता है।

पंजाब और हरियाणा सहित उत्तर प्रदेश के दिल्ली से सटे इलाकों में पराली जलाए जाने से राष्ट्रीय राजधानी को हर साल भीषण प्रदूषण के संकट का सामना करना पड़ता है। दिल्ली में भी पराली से होने वाले प्रदूषण से बचाव के लिए कोशिशें शुरू कर दी गई हैं। पराली जलाने से बचने के लिए बायो-डीकंपोजर घोल के छिड़काव का अभियान शुरू किया गया है। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने तीन दिन पहले राष्ट्रीय राजधानी में पराली जलाने

से बचने के लिए खेतों में जैविक रूप से अपघटित (बायो-डीकंपोजर) होने वाले घोल के छिड़काव का अभियान शुरू किया। इसका उद्देश्य सर्दियों के दौरान प्रदूषण के स्तर को कम करना है। यह अभियान नरेला विधानसभा क्षेत्र के पल्ला गांव में शुरू किया गया।

आम आदमी पार्टी ने कहा है कि दिल्ली सरकार सर्दियों में प्रदूषण से छुटकारा पाने के लिए 5,000 एकड़ से अधिक कृषि भूमि पर बायो डीकंपोजर का छिड़काव करेगी।

विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पहुंचा देता है। —माहात्मा गांधी

जनगणना समय पर हो ताकि.....

अगर मैं विस्तार में न जाऊं तो भी आप समझ जाएंगे कि किसी भी देश के लिए, उसकी नीतियों के निर्माण के लिए जनगणना का क्या महत्व होता है। भारत दुनिया के उन देशों में है जहां आजादी के पहले से नियमित रूप से जनगणना होती रही है। विद्वान लोग तो इस सिलसिले को पीछे खींच कर 800 से 600 ईसा पूर्व तक भी ले जाते हैं, यह बात वे ऋग्वेद के हवाले से कहते हैं। 321 से 296 ईसा पूर्व रचित कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी यह उल्लेख मिलता है कि शासन की कर नीति के निर्धारण के लिए जनगणना उपयोगी होती है। मुगल बादशाह अकबर के काल में रचित प्रशासनिक प्रतिवेदन आइन-ए-अकबरी में उस समय की जनसंख्या उद्योगों, संपदा और ऐसी ही अन्य अनेक बातों का विस्तृत उल्लेख इस तरफ इशारा करता है कि तब किसी तरह की जनगणना जरूर होती थी। निश्चय ही समय के साथ जनगणना के क्षेत्र और तकनीक का विस्तार हुआ है और अब उसकी प्रश्नावली निरंतर बड़ी और व्यापक होती गई है।

विदेशी शासन काल में हमारे देश को पहली व्यवस्थित जनगणना 1881 में हुई थी, हालांकि इससे पहले भी इस दिशा में अनेक प्रयास हुए थे। इसके बाद हर दसवें वर्ष नियमित रूप से जनगणना होती रही। यह क्रम 1941 तक निर्बाध चलता रहा। इसके बाद 1947 में देश आजाद हुआ और आजाद भारत की पहली जनगणना 1951 में हुई। यह क्रम भी 2011 तक निर्बाध चला। इसके बाद वाली जो जनगणना 2021 में होनी थी, वह किसी न किसी वजह से स्थगित होती रही और अब उम्मीद की जा रही है कि निरंतर भविष्य में हो जाएगी। यही यह बात भी गौर तलब है कि भारतीय जनगणना के इतिहास में यह पहली बार है जब कोई जनगणना सही समय पर नहीं हो सकी है।

लेकिन बाकायदा जनगणना के अभाव में भी अनेक ऐसे शोध परक प्रयास होते रहे हैं जो जनगणना वाले काम को ही आगे बढ़ाते हैं। ऐसा ही एक काम एसबीआई ने अपनी एक शोध पूर्ण रिपोर्ट, जो हाल में प्रकाशित हुई है, के माध्यम से किया है। यहां हम इस रिपोर्ट की कुछ खास बातों और उनसे उपजे सवालों पर बात कर रहे हैं। इस रिपोर्ट में जो बात हमें सबसे ज्यादा खुशी देती है वह यह है कि सन् 2024 में देश की आबादी की वृद्धि दर 1% तक जा पहुंचेगी है और यह 1951 के बाद न्यूनतम है। तब यह 1.25% थी और 1972 में सर्वाधिक 2.2% थी। सन् 2011 में, जब हमारी अब तक की आखिरी जनगणना हुई थी, देश की कुल आबादी 121.1 करोड़ थी और अब यह बढ़कर लगभग 142 करोड़ हो गई है। एक और अच्छी बात यह है कि भारत दुनिया का चौथे नम्बर का सबसे युवा देश है। हमसे अधिक युवा नाइजीरिया, फिलीपींस और बांग्लादेश है। सन् 2021 में हमारे देश में जनसंख्या की औसत आयु (मिडियन एज) 24 वर्ष थी और अनुमान है कि 2023-24 में यह बढ़कर 28-29 वर्ष हो जाएगी। ध्यान देने की बात है कि चीन की यह औसत आयु 2011 में 34.5 वर्ष थी जो अब बढ़कर 39.5 वर्ष हो गई है। इस औसत आयु के प्रभाव को इस रूप में भी देखा जाना चाहिए कि हमारे देश में काम कर सकने वाली आयु (15-59) के लोग 1971 से लगातार बढ़ते जा रहे हैं। अनुमान है कि 2021 में वे कुलजनसंख्या के 64.4% होंगे और 2031 तक बढ़कर 65.2% हो जाएंगे। यह स्थिति जहां बेहतर भविष्य की उम्मीदें जगाती है वहीं यह चुनौती भी प्रस्तुत करती है कि अब हमें पहले से अधिक लोगों के लिए रोजगार का प्रबंध करना होगा। जो काम कर सकते हैं, उन्हें अगर हम रोजगार उपलब्ध नहीं करा सकते हैं तो उनकी कुपट्टा, हाताशा और नाराजगी का बहाना स्वाभाविक होगा और इसके दुष्परिणामों की सहज ही कल्पना की जा सकती है। एक समय था जब देश में सरकार सबसे बड़ी रोजगार प्रदाता थी। लम्बे समय तक ऐसा रहने से आम जन भी रोजगार के लिए सरकार की तरफ ही देखने के अभ्यस्त हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त अब तक सरकारी नौकरी सुरक्षा

जनसंख्या परिदृश्य में जो बदलाव आ रहे हैं उन पर निगाह रखना और उनके अनुसार नीतियां और योजनाएं बनाना किसी भी लोकतांत्रिक सरकार की, बल्कि किसी भी सरकार की पहली जिम्मेदारी होनी चाहिए। यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि इस मामले में हमारी सरकारों का रिकॉर्ड बहुत अच्छा नहीं रहा है। उन्होंने वादे तो खूब किए हैं, सड़क बाग दिखाने में कोई सरकार किसी अन्य सरकार से पीछे नहीं रही है, लेकिन उन वादों को यथार्थ का परिधान पहनाने में प्रायः कोताही बरती गई है।

और सामाजिक प्रतिष्ठा देने वाले भी मानी जाती रही है। ज्योतिष का राज योग कुल मिलाकर सरकारी नौकरी की ही तो बात करता है। अब परिदृश्य बदल गया है। सरकार ने बहुत सारी कल्याणकारी योजनाओं से स्वयं को अलग कर लिया है। इससे स्वभावतः सरकारी नौकरी के अवसर टट गए हैं। लेकिन जनता को इस बात के लिए मानसिक रूप से अभी तैयार होना है कि रोजगार का मतलब केवल सरकारी नौकरी ही नहीं होता है। आम जन अभी भी सरकारी नौकरी हासिल करने को जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि मानते हैं। अब नौकरियां कम हैं और उन्हें चाहने वाले बहुत ज्यादा, तो इस राह में तमाम तरह की अनैतिकताएं घुस पड़ी हैं। इस बात को समझते हुए हमें दो मोर्चों पर गंभीरता से काम करना है। पहला तो निजी क्षेत्र में काम के अवसरों को बढ़ाना, और दूसरे जनता के सोच में बदलाव लाना।

जब नेतागण खास तौर पर अपने चुनौती भाषणों में इतने लाख या इतने करोड़ नए रोजगारों के सृजन के वादे करते हैं तो वे जनता के मन में सरकारी नौकरियों की बारिश करने की ही छवि उभारते हैं, जबकि ऐसा करना अब नागमनिक है। कितना अच्छा हो कि वे स्पष्ट कहें कि हम सब को सरकारी नौकरी नहीं दे सकते हैं। और इसी के साथ वे ऐसी नीतियां बनाएं जो नए उद्योग धंधों के विस्तार में सहयोगी हों। हमारे यहां रोजगार के खूब अवसर सिरजे जा सकते हैं लेकिन बहुत सारे अवसर किसी अदृशे बाजो के कारण हमारे हाथों से फिसल जाते हैं। सिंगल विण्डो जैसी बहुत सारी बातें की जाती हैं लेकिन जो लोग उद्योग स्थापित करने के लिए आगे आते हैं उनके अल्पबजट कुंठ और ही बताते हैं। सरकारी को इस तरफ बहुत गंभीरता से ध्यान देना होगा। इसी के साथ हमारी शिक्षा व्यवस्था में भी आमूल चूल बदलाव करना होगा। अभी हम जो डिग्रियां बांटते हैं वे केवल बेरोजगारों की संख्या बढ़ाने के काम आती हैं। हमारे स्नातक या परानातक किसी भी तरह की दक्षता प्राप्त नहीं करते हैं। और इसमें उनसे ज्यादा दोष उनका है जो पाठ्यक्रम बनाते हैं। इस तरफ ध्यान दिया जाना बहुत ही जरूरी है।

एक और बात एसबीआई की यह शोध बताती है कि एक तरफ जहां देश में युवा और काम करने वाले बढ़ रहे हैं, वहीं दूसरी तरफ देश उतनी ही तेजी से बूढ़ा भी हो रहा है। असल में देश में जनसंख्या वृद्धि की दर में कमी आ रही है और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं आदि के कारण लोगों की जीवन प्रत्याशा बढ़ रही है। इस कारण यह एक तथ्य है कि सन् 2011 से 2024 के बीच देश की आबादी में बुजुर्गों की हिस्सेदारी दो प्रतिशत बढ़ी है। सन् 2011 में जहां केवल 8.6% अर्थात् 10.4 करोड़ बुजुर्ग थे, अब 2024 में वे बढ़कर 10.6% अर्थात् 15 करोड़ हो गए हैं। इनमें से बहुत सारे जो सरकारी या ऐसी ही किसी नौकरी में थे रिटायर हो चुके हैं और उनकी पेंशन और उन्हें देख अन्य सुविधाओं पर काफी व्यय होता है, वहीं दूसरी तरफ जिन्हें पेंशन नहीं मिलती है उनके सामने दो वक्त की रोटी जुटाने का संकट भी खड़ा होता है और कोई भी सरकार इस संकट को अन्देखी नहीं कर सकती है। बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं सब को मिले, यह देकर सरकार का दायित्व है। केवल स्वास्थ्य सुविधाएं ही नहीं, सम्मानजनक जीवन यापन की सारी सुविधाएं जुटाना सरकार का प्राथमिक कर्तव्य है।

जनसंख्या परिदृश्य में जो बदलाव आ रहे हैं उन पर निगाह रखना और उनके अनुसार नीतियां और योजनाएं बनाना किसी भी लोकतांत्रिक सरकार की, बल्कि किसी भी सरकार को पहली जिम्मेदारी होनी चाहिए। यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि इस मामले में हमारी सरकारों का रिकॉर्ड बहुत अच्छा नहीं रहा है। उन्होंने वादे तो खूब किए हैं, सड़क बाग दिखाने में कोई सरकार किसी अन्य सरकार से पीछे नहीं रही है, लेकिन उन वादों को यथार्थ का परिधान पहनाने में प्रायः कोताही बरती गई है। यह स्थिति बदलनी चाहिए और यही यह भी कि सन् 2021 में जो जनगणना होनी थी, उसे अब शीघ्रतः शीघ्र करवाया जाना चाहिए ताकि सही और पर्याप्त तथ्य नीति निर्माताओं के सामने हो।

—अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)



राशिफल

सोमवार 7 अक्टूबर, 2024

अश्विन मास, शुक्ल पक्ष, चतुर्थी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत् 2081, अनुराधा नक्षत्र रात्रि 2:25 तक, प्रीति योग प्रातः 6:40 तक, वृश्चि करण प्रातः 9:48 तक, चन्द्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

वृश्चि स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरु-वृष, शुक-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वाथ सिद्धि योग सूर्योदय से रात्रि 2:25 तक है। रवियोग रात्रि 2:25 से आरम्भ होगा। आज भद्रा प्रातः 9:48 तक रहेगी। आज उपांग ललितता व्रत, ललितता पंचमी है।

श्रेष्ठ चौघडिया: अमृत सूर्योदय से 7:52 तक, शुभ 9:20 से 10:48 तक, चर 1:42 से 3:19 तक, लाभ-अमृत 3:09 से सूर्यास्त तक। राहुकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:26, सूर्यास्त 6:03

मेघ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में वाद-विवाद बढ़ सकते हैं। आज नवने कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

तुला
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। व्यक्तिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवर्तन के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अतिथियों का आमंत्रण रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मिथुन
नौकरपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ बनी रहेगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी।

धनु
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।

कर्क
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्य शीघ्रता/सुरामता से बनने लगेंगे।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में आपसी अनबन बढ़ने का भय है। परिवर्तन के व्यवहार के कारण परेशानी हो सकती है।

कुंभ
घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-मांगलिक-धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा।

कन्या
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवर्तन के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

मीन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। नवने कार्य बिगड़ सकते हैं।

राठौड़ राजवंश की कुलदेवी नागणेच्या माता



सत्यप्रकाश शर्मा

राजपूतों के विभिन्न कुलों द्वारा विभिन्न देवियों कुल देवियों के रूप में पूजी जाती है। राजपूतों में राठौड़ों को अलग ही गौरव प्राप्त है शूरवीरता के उन्होंने जो आयाम स्थापित किए, वे देश में ही नहीं बरत दुनिया में मिसाल बने इसलिए उनका स्थायी विशेषण 'राजवंक' बना। इन राजवंक राठौड़ राजपूतों की कुलदेवी 'नागणेच्या देवी' है। राठौड़ों की इस कुल देवी का नाम 'नागणा' नामक स्थान से जुड़ा हुआ है इनको 'नागणा री राय' (नागणा की अधिष्ठात्री देवी) भी कहा जाता है 'नागणा' एक गांव है जो राजस्थान राज्य के बाड़मेर जिले में स्थित है। इतिहासकारों के अनुसार इस बारे में एक कहावत भी प्रचलित है। 'नागणा री राय, करै बैल नै गाय'। इसका मतलब है कि एक बार एक चोर बैल चुराकर भाग रहा था, पता चलने पर लोगों ने उस चोर का पीछा किया तो वह चोर डरकर मंदिर में जाकर छुप गया व देवी से रक्षा करने की प्रार्थना की व शपथ थी आज के बाद कभी चोरी नहीं करेगा तो उसी समय माता नागणेच्या के आशीर्वाद से वे दोनों बैल गाय बन गये, व वह चोर लोगों के कोप से बच गया।

इतिहासकारों के मतानुसार श्री नागणेच्या माता जी का मंदिर राठौड़ वंश के संस्थापक राव सीहाजी के पोत्र राव धूहड़ जी, तत्कालीन खेड़ प्रदेश के शासक ने 1305 ई. में स्थापित किया था। राठौड़ों की वंशावली में उनकी राजधानी कर्नाटक और कन्नौज बतलाई गई है। मारवाड़ के राठौड़ 'राव सीहा जी' के वंशज माने जाते हैं। माना जाता है कि लगभग सात सौ वर्ष पूर्व राव सीहा जी द्वारिका यात्रा के समय मारवाड़ आये और राठौड़ वंश की नींव रखी। राव सीहा जी राठौड़ों के आदि पुरुष थे। इसी कारण से सूर्यवंशी राठौड़ राजवंश की कुलदेवी है 'श्री नागणेच्या देवी'। माना जाता है कि राठौड़ वंश के संस्थापक राव सीहा जी के पोत्र राव धूहड़ जी व पिथाजी सोडा कन्नौज गये, जहां पर राठौड़ राजाओं का राज था।

वहीं से नागणेच्या देवी की मूर्ति लाकर बाड़मेर जिले के कल्याणपुर गांव के पास 'नागणा' नामक स्थान पर नागणेच्या देवी की मूर्ति स्थापित कर मंदिर का निर्माण करवाया। वहीं कुछ अन्य इतिहासकारों के अनुसार राव धूहड़ जी दक्षिण भारत के कोंकण जो (कर्नाटक) राज्य में स्थित है, से अपनी कुलदेवी चक्रेश्वरी माता नागणेच्या की मूर्ति लेकर आये और 'नागणा' में मूर्ति की स्थापना की। इस प्रकार वहां स्थापित देवी 'माता नागणेच्या' के नाम से प्रसिद्ध हुई व राठौड़ वंश के राजपूतों के द्वारा पूजा जाने लगी।

राजपूत जाति के साथ ही कई अन्य जातियां जैसे- ओसवाल, राजपुरोहित, घांची, सुनार व प्रजापति व और अन्य जातियां भी माता नागणेच्या को अपनी कुलदेवी के रूप में पूजती है। इस धाम में सभी जातियों के लोगों की आस्था होने के कारण यह माता नागणेच्या का स्थान

मारवाड़ का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान बन गया।

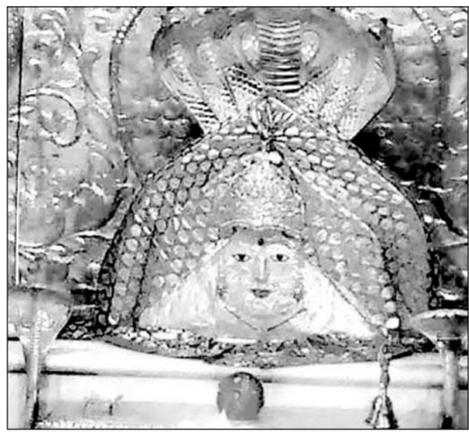
माता नागणेच्या सतयुग में मंडा देवी, त्रेतायुग में राटेश्वरी देवी, द्वापरयुग में पंखीणी देवी व कलयुग में 'नागणेच्या देवी' के रूप में पूजी जाने लगी।

ग्रंथों में वर्णानुसार "अष्ट दशभुजाओं वाली नागणेच्या माता महिष मर्दिनी का स्वरूप है। बाज या चील पक्षी उनका प्रतीक चिह्न है। जो कि जोधपुर रियासत, बीकानेर रियासत व किशनगढ़ रियासत के ध्वजों पर अंकित है।" नागणेच्या देवी को जोधपुर राज्य की कुलदेवी माना जाता है।

माता नागणेच्या के राज्य में कई और मंदिर भी हैं इन्हीं में एक बीकानेर में शहर से करीब दो किलोमीटर की दूरी पर दक्षिण पूर्व में है। देवी नागणेच्या का यह मंदिर एक विशाल और ऊंचे चबूतरे पर स्थित है, जिसके अन्दर अष्टदशभुजाओं वाली नागणेच्या देवी की चांदी की मूर्ति स्थापित है। इतिहासकारों के अनुसार देवी नागणेच्या की यह प्रतिमा बीकानेर राज्य के संस्थापक राव बीकाजी अन्य राज चिन्हों के साथ अपने पतृक राज्य जोधपुर से बीकानेर लाए थे। वहीं माता का एक मंदिर जालोर में भी है। लेकिन मुख्य धाम 'नागणा' को ही माना जाता है।

कहा जाता है कि राव धूहड़ जी ने माता नागणेच्या का मंदिर स्थापित कर 'नागणेच्या खांप राठौड़ों' को कुलदेवी की पूजा-अर्चना करने का आदेश व अधिकार दिया था। उन्होंने अपनी कुलदेवी नागणेच्या माता के नाम जमीन भी दी थी, जिससे मंदिर का रख-रखाव व विस्तार किया जा सके।

25 मार्च 2007 को राव धूहड़ जी जयंती एवं नागणेच्या माता के पाटोत्सव के अवसर पर जोधपुर के पूर्व महाराजा गज सिंह की अध्यक्षता में एक विशाल



जनसभा का आयोजन किया गया जिसमें तत्कालीन महामहिम उप राष्ट्रपति भैरों सिंह शेखावत मुख्य अतिथि थे व मारवाड़ के कई गणमान्य लोग व साधु संत भी थे। इस सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि इस ऐतिहासिक तीर्थ स्थान के संचालन व मंदिर के जीर्णोद्धार हेतु एक ट्रस्ट का गठन किया जाए। इस प्रकार 5 मई 2007 को 'नागणेच्या माता ट्रस्ट नागणा' का विधिवत गठन हुआ।

वर्तमान में इस ट्रस्ट के न्यासी गण हैं। अध्यक्ष गज सिंह पूर्व महाराजा जोधपुर, वरिष्ठ उपाध्यक्ष महाराजा हेमलता राजे, उपाध्यक्ष रावल किशन सिंह जसोल, महामंत्री ब्रिगेडियर शक्ति सिंह (से.नि.), मंत्री उम्मेद सिंह अरबा व अन्य न्यासी भी माता नागणेच्या गौदीपति तारातरा मठ, गजेन्द्र सिंह खीवसर, भवानी सिंह पाल, राजेश धनराज राठी, मेजर मानवेन्द्र सिंह जसोल

व डा. समरजीत सिंह दासपां। ट्रस्ट मंडल उत्तरांचल मंदिर के भव्य निर्माण की और अग्रसर है।

श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए एक आधुनिक सुविधाओं वाली धर्म शाला है, एक अत्याधुनिक उपकरणों वाली भोजन शाला है जिसमें श्रद्धालु को बहुत कम लागत पर शुद्ध व सात्विक भोजन उपलब्ध कराने की व्यवस्था है। यात्रीगण स्वयं भोजन प्रसाद बनाना चाहें तो उनके लिए सभी सुविधाओं वाली एक पाकशाला भी है। दर्शनार्थियों के ठहरने के लिए और भी कई धर्मशालाएं हैं। माता के धाम पर आने वाले श्रद्धालु रेल मार्ग द्वारा जोधपुर, पचपदरा या समदड़ी पहुंचकर वहां से सड़क मार्ग द्वारा कल्याणपुर से माता नागणेच्या देवी के मंदिर आसानी से पहुंच सकते हैं। वहीं निजी वाहन द्वारा सड़क मार्ग से भी माता के धाम तक पहुंच सकते हैं।

—सत्यप्रकाश शर्मा, जोधपुर।

बाल मुकुंद ओझा को "स्व. घनश्याम गोस्वामी स्मृति लाइफटाइम अचीवमेंट" अवार्ड मिला

अमरसिंह चौहान को किशन कुमार व्यास आजाद स्मृति सम्मान से नवाजा

बीकानेर, (निसं)। पब्लिक रिलेशंस एंड प्लानिग सर्विसेज एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (प्रसार) का राज्य स्तरीय जनसंपर्क सम्मान समारोह रविवार को रानी बाजार औद्योगिक क्षेत्र स्थित जिला उद्योग संघ भवन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में स्व. घनश्याम गोस्वामी स्मृति लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड जनसंपर्क विभाग के पूर्व संयुक्त निदेशक चंद्र चंद्र सक्सेना को सौंपित रहा। इस दौरान चंपा खेड़ी (मेडता) के वरिष्ठ साहित्यकार देवकिशन राजपुरोहित को विशिष्ट सेवा सम्मान दिया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बीकानेर (पब्लिक) विभाग के जेठानंद व्यास थे। उन्होंने कहा कि सरकार की योजनाओं और कार्यक्रमों को जन-जन तक पहुंचाने में जनसंपर्क विभाग का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। विभाग के पूर्व अधिकारियों को सम्मानित करने की परंपरा उनके योगदान को याद करने का माध्यम है। उन्होंने कहा कि इससे जनसंपर्क सेवा के युवा अधिकारियों को प्रेरणा मिलेगी। महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित



बाल मुकुंद ओझा को घनश्याम गोस्वामी स्मृति और अमर सिंह चौहान को किशन कुमार व्यास आजाद स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया।

ने कहा कि वरिष्ठजनों का सम्मान हमारे संस्कार है। प्रसार द्वारा इस दिशा में बेहतर पहल की गई है। उन्होंने कहा कि वरिष्ठजन अनुभव की पाठशाला होते हैं। इनसे सीखना हमेशा ज्ञानवर्धक होता है। वरिष्ठ कवि कथाकार राजेंद्र जोशी ने दिनेश चंद्र सक्सेना के व्यक्तित्व और कुतिल्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सक्सेना ने जनसंपर्क के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किया।

जिला उद्योग संघ के अध्यक्ष द्वारका प्रसाद पचीसिया ने कहा कि जनसंपर्क विभाग में सदैव बीकानेर का बेहतर प्रतिनिधित्व रहा है। उन्होंने कहा कि आज के दौर में जनसंपर्क विधा को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने की

जरूरत है। प्रसार द्वारा युवाओं को इससे जुड़ा प्रशिक्षण किया जाता है, तो जिला उद्योग संघ इसके आयोजन में भागीदारी निभाएगा।

प्रसार के प्रदेश उपाध्यक्ष तथा जनसंपर्क विभाग के सहायक निदेशक हरिशंकर आचार्य ने कहा कि अगले वर्ष से दिनेश चंद्र सक्सेना की स्मृति में युवा जनसंपर्क कर्मी को भी पुरस्कृत किया जाएगा। उन्होंने अब तक की आयोजनों के बारे में बताया और स्व. घनश्याम गोस्वामी तथा स्व. किशन कुमार व्यास आजाद के व्यक्तित्व से जुड़े पहलुओं को रखा। सम्मान के पश्चात बालमुकुंद ओझा ने बीकानेर पदस्थापन से जुड़ी यादें सांझा कीं। उन्होंने जनसंपर्क के

माध्यमों में आए बदलाव के बारे में बताया और कहा कि सूचना प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया के दौर में जनसंपर्क का कार्य आसान हुआ है, लेकिन इसमें चुनौतियां बढ़ी हैं। इससे पहले अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर तथा दिनेश चंद्र सक्सेना को पुष्पांजलि अर्पित कर कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत की। साहित्यकार राजाराम स्वर्णकार, गोपाल जोशी तथा करियर काउंसलर डॉ. चंद्रशेखर श्रीमाली ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। अतिथियों ने साफा, शॉल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र और स्मृति चिह्न भेंट कर राजपुरोहित, ओझा और चौहान का सम्मान किया। जनसंपर्क अधिकारी अमनदीप बिशोई ने आभार जताया।

कार्यक्रम का संचालन ज्योति प्रकाश रंगा ने किया। इस दौरान नारायण दास आचार्य, नारायण दास रंगा, सुभाष बलवदा, संजय पुरोहित, डॉ. विजय शंकर आचार्य, बालकल्याण समिति अध्यक्ष जुगल किशोर व्यास, डॉ. नमामि शंकर आचार्य, शंकर सिंह राजपुरोहित, मनमोहन कल्याणी, मालकोश आचार्य, पवन सारस्वत, हेमराम जोशी, दुर्गाशंकर आचार्य, अविनाश आचार्य, अमित व्यास, दिनेश चूरा, सुभाष जोशी, जनसंपर्क विभाग के पूर्व कार्मिक राजेंद्र कुमार भागव, राजेंद्र जोशी, फिरोज खान, रमेश साध, विक्रम सिंह, आनंद सिंह, केशव आचार्य तथा स्व. घनश्याम गोस्वामी, किशन कुमार व्यास और दिनेश चंद्र सक्सेना के परिवार सहित बड़ी संख्या में मौजूद रहे।

बीकानेर में जर्जर भवनों की सुध नहीं ले रहा निगम प्रशासन

बीकानेर, (निसं)। शहर की चारदीवारी में कुछ भवन ऐसे हैं जो न सिर्फ बीकानेर की साख पर बढ़ा लगा रहे हैं, बल्कि दुर्घटना को भी न्योता दे रहे हैं। पुराने शहर में बंदों की पिरोल में ऐसे कई मकान देखने को मिले हैं। इन मकानों की हालत जर्जर हो चुकी है।

लेकिन भवन मालिक इनकी संपाल नहीं कर रहे। नतीजन अब ये जर्जर भवन क्षेत्रीय लोगों के लिए भी खतरा बन गए

■ नगर निगम प्रशासन ने मकानों को चिन्हित कर भवन मालिकों को नोटिस जरूर थमाए, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई

है। हालांकि नगर निगम प्रशासन ने इन मकानों को चिन्हित कर उनके भवन मालिकों को नोटिस जरूर थमाए हैं। बावजूद इसके निगम को कार्रवाई महज कागजों तक सीमित है। जैसे निगम किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार कर रहा है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि कार्रवाई करने आने वाली टीम भ्रमण कर निकल जाती है। इनको गिराने का काम नहीं कर रही है। जबकि निगम में अनेक बार शिकायत भी की जा चुकी है। यदि भवन मालिक मकान ध्वस्त नहीं करता है, तो

निगम ध्वस्तीकरण की कार्रवाई करेगा। हालांकि कार्रवाई के नाम पर महज कुछ मकानों को ही ध्वस्त किया गया है। इस पर जोन अधिकारियों का तर्क है कि चिन्हित मकानों में अधिकतर पारिवारिक विवाद से जुड़े का तर्क देते हैं, लेकिन इस तर्क के चलते आसपास के लोग परेशान हैं। उन्हें हरदम इन मकानों के गिरने का खतरा बरकरार रहता है। स्थानीय निवासी विजय रांका ने बताया कि जर्जर इमारतें कभी भी बड़े हादसे

को अंजाम दे सकती हैं। जब वे यहां से गुजरते हैं तो डर सा बना रहता है। हर समय गलियों में बचने भी खेलते रहते हैं। यह एक गंभीर समस्या है प्रशासन को इस और ध्यान देने की जरूरत है। लोगों ने यह भी बताया है कि जहां ये मकान स्थित हैं वहां काफी तंग गलियां हैं। यहां न तो एम्बुलेंस जाने की सुविधा है और न ही दमकल गाड़ियों की। ऐसे में कोई बड़ा हादसा हुआ तो काफी नुकसान हो सकता है।

छह घंटे श्रमदान करके बदली वेणासर तालाब की तस्वीर

बाड़मेर, (नि.सं.)। नवो बाड़मेर अभियान के तहत रविवार को श्रमदान से वेणासर तालाब की सूरत बदल दी गई। करीब छह घंटे तक चले सफाई अभियान में सैकड़ों युवाओं एवं स्थानीय नागरिकों की भागीदारी रही। इस दौरान बबूल के पौधों की कटाई के साथ गंदगी के ढेर हटाए गए।

श्रमदान को लेकर युवाओं के साथ स्थानीय नागरिक भी खासे उत्साहित नजर आए।

बाड़मेर शहर में नवो बाड़मेर के जरिए चलाए जा रहे सफाई अभियान के तहत जिला कलेक्टर टीना डानी के निर्देशन में रविवार को यूआरटी सचिव श्रवण सिंह राजावत, आयुक्त विजय प्रतापसिंह, अतिरिक्त प्रशासनिक अधिकारी प्रीतमसिंह भूरटिया एवं

तनोत डिफेंस एकेडमी के निदेशक घेवरसिंह राजपुरोहित की अगुवाई में सफाई अभियान चलाया गया।

रविवार प्रातः 5 बजे मांगुसिंह बिराला और महावीरसिंह चूली के निर्देशन में तनोत डिफेंस एकेडमी एवं स्थानीय करीब 200 युवाओं ने सफाई अभियान की शुरुआत की।

वेणासर तालाब में छह घंटे तक चले सफाई अभियान के दौरान बबूल के पौधों की कटाई के साथ कचरे के ढेर हटाए गए।

मानव श्रृंखला बनाई

वेणासर तालाब की गहराई अधिक होने के कारण कचरा टूटकर टूटलियों तक पहुंचाना काफी मुश्किल था। ऐसे में युवाओं ने मानव श्रृंखला बनाते हुए

एक-दूसरे को तगारियां पकड़ाते हुए सफाई के कार्य को अंजाम दिया।

नवो बाड़मेर अभियान की शुरुआत के बाद जिला कलेक्टर को अवगत कराया गया था कि पुराने जल स्रोत वेणासर तालाब में लोग खुले में शौच जा रहे हैं। इसमें कचरे के ढेर लगे हुए हैं। इसके जीर्णोद्धार की जरूरत है। इस पर तनोत डिफेंस एकेडमी को गोद दिया गया। रविवार को भी सफाई अभियान के दौरान कलेक्टर ने लगातार मोनेटरिंग करते हुए निर्देशित किया।

लोग जुड़ते गए, कारवां बन गया

वेणासर तालाब में सफाई अभियान चलाने में पहली समस्या में

पॉवर की थी, इसके लिए तनोत डिफेंस एकेडमी के निदेशक घेवर सिंह आगे आए संसाधनों का जिम्मा नगर परिषद ने संभाला। वार्ड के लोग श्रम दान कर्मियों के सेवा के लिए तत्पर रहे। अभियान के दौरान चार ट्रॉली कचरा और प्लास्टिक निकाला गया। करीबन 400 बबूल काटकर बाहर लाए गए। सूखी घास को इटया के साथ प्लास्टिक रैपर एवं बोतलों को एकत्रित किया गया। इस दौरान करीब 200 मीटर रंग रोगन का कार्य भी दीवार पर किया गया।

नवो बाड़मेर अभियान के तहत रविवार को विभिन्न वार्डों में सफाई अभियान चलाया गया। इस दौरान कचरा हटाने के साथ बबूल की झाड़ियों की कटाई का कार्य करवाते हुए रास्तों को खुलवाया गया।

अशोक गहलोत जोधपुर पहुंचे

जोधपुर, (कासं)। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत रविवार को जोधपुर पहुंचे। उन्होंने पत्रकारों से बातचीत करते कहा कि राजस्थान में सरकार नहीं सर्कस चल रहा है। अधिकारी और लोग डेंगू से मर रहे हैं।

यहां उन्होंने एयरपोर्ट पर मीडिया से बात की थी। गहलोत ने भाजपा सरकार पर तंज कसा। कहा- 'डेंगू फैल रहा है, लोग मर रहे हैं, लेकिन पार्टी और सरकार बिल्कुल ध्यान नहीं दे रही है। जोधपुर में विश्वविद्यालय हमने खोले, लेकिन उनका कोई अला-पता नहीं है। संजीवनी मामले पर केंद्रीय मंत्री जगेंद्र सिंह शेखावत को क्लीन चिट मिलने के सवाल पर गहलोत ने कहा कि मैंने इस मामले में अपना पक्ष रख दिया था। हरियाणा में चुनाव के बाद आ रहे एजेंट मोल को लेकर गहलोत ने खुशी जाहिर की है। उन्होंने कहा कि इससे साफ पता चल रहा है कि कांग्रेस के समर्थन में अब फिर से माहौल बन रहा है।

राणा पूजा सोलंकी पर व्याख्यानमाला आयोजित

जोधपुर, (नि.सं.)। राणा पूजा सोलंकी की स्मृति में रविवार 06 अक्टूबर को सांय 05.00 बजे पावटा बी रोड स्थित मारवाड़ राजपूत सभा भवन में राणा पूजा सोलंकी स्मृति व्याख्यानमाला आयोजित की गई।

मारवाड़ राजपूत सभा महासचिव के वी सिंह चांदरख ने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि मारवाड़ राजपूत सभा द्वारा समय समय पर महापुरुषों, वीरों व इतिहास पुरुषों के स्मरण के लिए लगातार प्रयास किये जाते हैं। इसी के तहत सोलंकी वंश के राणा पूजा सोलंकी के व्यक्तित्व व वीरता पर व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया।

राणा पूजाजी सोलंकी स्मृति

व्याख्यान कार्यक्रम में इतिहासविदों ने अवगत कराया कि राणा पूजा सोलंकी मेवाड़ के पानवा ठिकाने से सम्बंधित महान योद्धा एवं महाराणा प्रताप के प्रमुख सहयोगियों में से एक थे।

इस दौरान वक्ताओं ने राणा पूजा सोलंकी के व्यक्तित्व व उनके कृत्यों तथा महाराणा प्रताप के समकालीन इतिहास में राणा पूजाजी के योगदान पर प्रकाश डाला गया।

वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि वीरों एवं महापुरुषों के व्यक्तित्व, ऐतिहासिक घटनाक्रमों, सांस्कृतिक विरासतों के संरक्षण के लिए सदैव सजग एवं जागरूक रह कर कार्य करने की आवश्यकता जताई।

उन्होंने कहा कि जहाँ कहीं भी स्मारक, छतरियाँ, देवालियाँ, चबूतरा बने हैं उनके जीर्णोद्धार व संरक्षण के लिए सदैव कार्य करने पर बल दिया।

इस दौरान मारवाड़ राजपूत सभा उपाध्यक्ष अर्जुनसिंह रूणकिया, कार्यकारिणी सदस्य एडवोकेट गोविन्द सिंह, ओमकरणसिंह मूंजासर, शिवमंगलसिंह, लोकेन्द्रसिंह शक्तावत, रतनसिंह चम्पावत, श्री हनवंत एज्युकेशनल सोसायटी सचिव राजेन्द्रसिंह लीलावत, करणी सेना जिलाध्यक्ष शक्तिसिंह ओस्तरा, जालम सिंह परमार, विरेन्द्रसिंह शेखावत, विक्रमसिंह बांवरला, राजेन्द्र सिंह नरुका सहित कई जने उपस्थित रहे।

जोधपुर ने कूडो प्रति. में 37 स्वर्ण पदक जीते

जोधपुर, (नि.सं.)। कूडो इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ इंडिया की रेफरी कार्डसिल के उपाध्यक्ष एवं प्रशिक्षक शिखान राजकुमार मेनारिया के नेतृत्व में कूडो मुख्यलय राजस्थान एवं एस.आर.ए.एम.एम.ए. के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 5 दिवसीय वार्षिक आवासीय प्रशिक्षण शिविर के साथ 11वीं राज्य स्तरीय कूडो चैंपियनशिप एवं 5वें कूडो फेडरेशन कप 2024 में शानदार प्रदर्शन करते हुए 37 स्वर्ण, पदकों पर कब्जा कर जोधपुर कूडो टीम ने बनाया इतिहास।

11वीं राज्य कूडो प्रतियोगिता में जोधपुर ने 37 स्वर्ण 32 रजत एवं 17 कांस्य सहित कुल 86 पदकों पर कब्जा कर इस प्रतिष्ठित चैंपियनशिप ट्रॉफी का उपविजेता बना।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि जोगेश्वर गर्ग (कैबिनेट मिनिस्टर एवं मुख्य सचेतक राजस्थान सरकार) रहे।

मुख्य अतिथि जोगेश्वर गर्ग ने खिलाड़ियों के शानदार व दमदार प्रदर्शन से अभीभूत होकर आश्चर्य किया कि भारत सरकार से मान्यता प्राप्त इस खेल को राजस्थान स्पोर्ट्स कार्डसिल में सम्मिलित करने के लिए हमने प्रयास शुरू कर दिया है और कोई भी अडचन को सुलझाकर शौच स्पोर्ट्स कार्डसिल खेल घोषित किया जाएगा।

कूडो महासंघ भारत के मेहुल चोरा ने बताया कि अगर कूडो राजस्थान क्रिडा परिषद की खेल सूची में सम्मिलित हो जाता है तो कूडो खिलाड़ी राज्य की सरकारी नौकरियों में आरक्षण एवं अनुदान राशि के पात्र होंगे।

कूडो एसोसिएशन जोधपुर के सचिव राजकुमार बांगड ने बताया कि कूडो की दोनों प्रतिष्ठित प्रतियोगिताओं में प्रदर्शन के आधार पर जोधपुर के 3 श्रेष्ठ खिलाड़ियों को बेस्ट-फाइटर् ट्रॉफी से सम्मानित किया गया जिनमें रौनक घारू, रुद्राणी पटेल, लविक सोनी सम्मिलित है।

संसेई अरूणा पटेल ने बताया की समारोह के अंत में दिवंगत कूडो इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ इंडिया के तकनीकी निदेशक परसी बाहमनी 8 डैन ब्लैक बेल्ट जापान को श्रद्धांजलि अर्पित कर उनके भारत की मार्शल आर्ट्स में योगदान (विशेषकर कूडो) के लिए सराहा गया समारोह के मुख्य अतिथि द्वारा अरमेनिया में होने वाली अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता कूडो यूरोपिया कप 2024 के लिए भारतीय टीम में सम्मिलित जोधपुर के की सुश्री ख्याति परमार, प्रिंस अजय कानूनगो एवं मुकेश पटेल का सम्मान किया। जोधपुर पहुंचने पर टीम का ढोल नगाडो एवं फूल मालाओं से स्वागत किया गया।

छात्र-छात्रा टेबल टेनिस प्रति. संपन्न पाली, (नि.सं.)। सेंट्रल एकेडमी स्कूल नयी गांव पाली के तत्वाधान में आयोजित 68वीं राज्य स्तरीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय 14 वर्षीय छात्र-छात्रा टेबल टेनिस प्रतियोगिता का समापन सेंट्रल एकेडमी स्कूल के बी.आर. बिड़ला कैम्पस में हुआ।

प्रतियोगिता संयोजक एवं प्रधानाचार्या शर्मिला भंडारी ने बताया कि मुख्य अतिथि महापौर रेखा-राकेश भाटी ने अपने उद्बोधन में बताया कि आने वाले समय में बांगड स्टेडियम की छत को सांसद एवं विधायक कोष से निर्मित किया जायेगा जिससे खिलाड़ियों को कोई दुविधा ना हो। उन्होंने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि जो खिलाड़ी खेल को जीतने की भावना से खेलता है वह हमेशा बुलुंदियों को छूता है। उन्होंने सेंट्रल एकेडमी स्कूल परिवार को इस आयोजन हेतु शुभकामनाएं दी। प्रतियोगिता सचिव एवं जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक शिक्षा मदन पंवार ने इस प्रतियोगिता में पिछले 10 वर्षों के बाद टीम इवेंट में पाली के तृतीय स्थान एवं लगभग 17 वर्षों के बाद छात्र एकल वर्ग में पाली के चतुर्थ स्थान प्राप्त करने पर प्रसन्नता जाहिर की।

सभापति रेखा भाटी सहित अतिथियों द्वारा विजेताओं को ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया। ट्रॉफी के साथ खिलाड़ियों का जोश देखते ही बनता था।

मानसिक स्वास्थ्य सप्ताह के तहत जागरूकता गतिविधियां जारी

बालोतरा, (नि.सं.)। जिला कार्यक्रम अधिकारी विजय सिंह ने बताया कि चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री जगनेन्द्रसिंह खीवसर की पहल पर प्रदेश में मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को लगातार सुदृढ़ किया जा रहा है।

सीएमएचओ डॉ. वांकाराम चौधरी ने बताया कि विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर जिले भर में 4 अक्टूबर से 10 अक्टूबर तक मानसिक स्वास्थ्य सप्ताह आयोजित कर निर्धारित थीम पर विभिन्न जन-जागरूकता गतिविधियां आयोजित की जाएंगी।

उल्लेखनीय है कि इस वर्ष विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस की थीम 'इट इज टाईम टु प्रायोरटाईज मेंटल हेल्थ एट वर्क प्लेस- निर्धारित की गयी है।

सीएमएचओ डॉ. वांकाराम चौधरी ने बताया कि आज के दौर में मानसिक स्वास्थ्य एक बहुत महत्वपूर्ण पहलू है। आज प्रत्येक आयु के व्यक्ति अवसाद जैसी विभिन्न मानसिक स्वास्थ्य बीमारियों से ग्रस्त रहने लगा है, लेकिन आज भी मानसिक स्वास्थ्य विषय पर लोग उतनी चर्चा नहीं कर पाते हैं और भविष्य में बहुत बड़ी परेशानियों, यहां तक कि आत्महत्या करने पर उतारू हो

जाते हैं।

विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के दौरान जिला स्तर पर कार्यालयों, विद्यालयों एवं अन्य स्थानों पर चर्चा संगोष्ठियों एवं अन्य गतिविधियां आयोजित की जाएंगी।

जिला कार्यक्रम अधिकारी विजय सिंह ने बताया कि इसके साथ ही सोशल मीडिया पर प्रभावशाली वक्ताओं के साथ इस विषय पर चर्चा का आयोजन किया जा रहा है। चिकित्सकों की मौजूदगी में कार्यस्थल पर तनाव प्रबंधन एवं विद्यार्थियों के लिए सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य विषय पर सत्र आयोजित किए जा रहे हैं। विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस 10 अक्टूबर के अवसर पर विभिन्न हितधारकों की मानसिक स्वास्थ्य विषय में भूमिका विषय पर चर्चा बैठक का आयोजन किया जाएगा। कार्य स्थल पर हस्ताक्षर अभियान भी संचालित किया जाएगा।

बीसीएमओ व चिकित्सा अधिकारी प्रभारियों को शिक्षण संस्थानों में मानसिक स्वास्थ्य पर वार्ता संगोष्ठी, स्लोगन, पोस्टर व निबंध लेखन तथा अभिभावकों से संवाद कार्यक्रम आयोजित करने के निर्देश दिए गए हैं।

पौधारोपण किया

जालोर, (नि.सं.)। सिलावट समाज के लोगों ने रविवार को सिलावट समाज शहर ए खामोशन के बगीचे में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए अधिकाधिक पौधारोपण करने की अपील की।

प्राप्त जानकारी के अनुसार कार्यक्रम संयोजक सीपियर नर्सिंग ऑफिसर शहजाद खान ने बताया कि राज्य सरकार की ओर से चलाए जा रहे हरियाला राजस्थान कार्यक्रम के अंतर्गत सिलावट समाज के लोगों द्वारा पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया।

उन्होंने कहा कि सुरक्षित भविष्य एवं स्वस्थ जीवन के लिए पौधारोपण करना जरूरी है। ग्लोबल वार्मिंग को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति को अपने आसपास हरा भरा वातावरण बनाए रखना चाहिए और प्रकृति के प्रति सदैव कर्तव्य होकर इसकी रक्षा के लिए जागरूक रहना चाहिए सभी ने अधिक से अधिक पौधे लगाने एवम उनकी देखभाल का जिम्मा लिया। इस अवसर पर समाज के लोगों ने सिलावट समाज शहर ए खामोशन के बगीचे में श्रमदान कर साफ सफाई कर स्वच्छता का संदेश दिया।

इस अवसर पर पूर्व पार्षद अयूब शेख, जलाल खान, ईसाफ अली, लियाकत अली, सलीम जावेद, मुस्ताक खान, ईमरान खान अब्दुल गफ्फार, हिदायत खान, शाहनवाज खान, आबाद अली, अनवर खान, एजाज अली, शहजाद एस के, जहंगीर खान, जानशेरखान, अरमान खान, नोहसीन, हमजा अली हसन सहित सिलावट समाज के लोग मौजूद थे।

निसार राही के काव्य संग्रह की सराहना हुई

जोधपुर, (कासं)। जो सामना हो तो पहचान ही नहीं पायें, हम अपने आप से मिले ही कितने हैं....., सुनाई देती है आवाज किस के कदमों की, बहाना ढूँढ रहा है चराग जलने का....., ख़ाब के पेड़ याद के बादल, अब के रस्ते में कितने साये थे....., ये सोचता हूँ कि कहने से क्या नहीं आता, सुखन में अब जो असर अनकहे से आया है.... जैसे शेरों से डॉ निसार राही ने अपने सद्य प्रकाशित संग्रह से समा बांध दिया। प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था तहरीर द्वारा डॉ. मदन डाना साहित्य भवन में आयोजित कार्यक्रम में निसार राही ने अपने मार्गदर्शक शीन काफ निजाम को समर्पित इस संग्रह से पाठ की शुरुआत 'हमसफर', 'कोई दूसरा', 'दो घडी' और 'एक साथ' जैसी अन्य कई खूबसूरत नज्मों से की।

निसार राही के काव्य पाठ से पूर्व आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, अनकहा, लपज 'कुन' पाठ-पठन, नज्मों के शीर्षक तथा अन्य हवालों से बड़े केनवस पर आलोचनात्मक विश्लेषण करते हुए शाइर, नाकिद और इस्तिप्रसार के संपादक आदिल रज़ा मंसूरी ने डॉ. निसार राही के काव्य संग्रह 'समन्दर से ख़फा मौज' पर पत्रवाचन किया। इस अवसर पर जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर के. एल. श्रीवास्तव ने बतौर मुख्य अतिथि अपने उद्बोधन में जहां एक ओर आदिल रज़ा मंसूरी के पत्र की भूरि भूरि प्रशंसा की वहीं ये भी कहा कि मुझे निसार राही

का काव्य संग्रह इतना अच्छा लगा एक बार में ही पूरा पढ़ गया और इस साहित्यिक कार्यक्रम से मैं बहुत सम्बद्ध हो कर जा रहा हूँ।

विशिष्ट अतिथि मौलाना आज़ाद यूनिवर्सिटी, जोधपुर के प्रेसीडेंट (वी सी) डॉ जमील क़ाज़मी ने कहा कि निसार राही ने अपने पिता ए. डी. राही की विरासत को शीन काफ निजाम की रहनुमाई में बखूबी आगे बढ़ाया। आरंभ में गवर्नमेंट आर्ट्स कॉलेज, कोटा के शोधार्थी वसीम बैलमि ने अपने पत्रवाचन में शीन काफ निजाम और निसार राही दोनों की एक एक नज्म के माध्यम से 'नदी' के इस्तआरे पर बात करते हुए दोनों नज्मों के अहसास, आहंग और लय में क्या अंतर है इसका निर्णय पाठकों पर छोड़ा और ये भी कहा कि डॉ निसार राही की शाइरी बीच समंदर में पंवर और तूफानों से गुजरते हुए किनारे तक का सफ़र तय करने में कामयाब हुई है। मशहूर अफसाना निगाए एवं शाइर हबीब कैफ़ी ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि शाइरी की ताक़त से कोई इनकार नहीं कर सकता और कहा कि आदिल रज़ा मंसूरी ने निसार राही की शायरी पर आधुनिक तकनीक के नज़रिए से अच्छा विश्लेषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए इश्राकुल इस्लाम माहिर ने कहा कि निसार राही कि रचनाएं मुशाअरे के बजाय मुतालिये में ज्यादा खुलती हैं। तहरीर संस्था ने डॉ निसार राही सहित अतिथियों का स्वागत किया।



**कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार**



“ मौसम के जोखिमों से हमारे मेहनती किसान भाई-बहनों के हितों को सुरक्षित करने में प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना काफी कारगर साबित हो रही है। इसका लाभ करोड़ों किसानों को मिल रहा है। ”

— नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

फसल की सुरक्षा का वरदान, पॉलिसी हाथ में पाया किसान

फसल बीमा कराओ, सुरक्षा कवच पाओ



मेरी पॉलिसी मेरे हाथ

महा अभियान
1 - 31 अक्टूबर, 2024

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की उपलब्धियाँ

- **19.67 करोड़** किसान भाई-बहनों को अब तक मिला फसल बीमा का लाभ
- **₹ 1.65 लाख करोड़** के दावों का भुगतान किसानों को किया
- **70 करोड़** से अधिक किसान आवेदन प्राप्त

देशव्यापी हेल्पलाइन 14447

आपके गाँव में होने वाले शिविर में इन विषयों पर जानकारी प्राप्त करें:

- बीमा पॉलिसी, सरकारी नीतियाँ, भूमि अभिलेख एवं दावे और शिकायत निवारण
- किसानों के प्रशिक्षण हेतु फसल बीमा पाठशाला

बीमा भागीदार



योजना से संबंधित अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

जनसेवा केंद्र | क्रॉप इंश्योरेंस ऐप <https://play.google.com> | पोस्ट ऑफिस | बैंक शाखा

f o X y @PMFBI

योजना से संबंधित अधिक जानकारी के लिए QR कोड स्कैन करें



जैसलमेर में लापता दो बच्चों के शव पानी के टैंक में मिले

दोनों बच्चों के शव पड़ोस के एक खाली मकान के पानी के टैंक में मिले

जैसलमेर, (नि.सं.)। जैसलमेर में लापता हुए दो बच्चों के शव वाटर टैंक में मिले हैं। परिवार ने किडनेप और हत्या की आशंका जताते हुए मामलों की डेडबॉडी लेने से इनकार कर दिया है। उनका आरोप है कि शवों पर चोट के निशान हैं। वहीं, पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम के बाद मौत का कारण सामने आएगा। मामला जैसलमेर शहर के बबर मगरा इलाके का है।

शहर कोतवाल सर्वांसिंह ने बताया कि बबर मगरा में रहने वाला

■ परिवार ने किडनेप और हत्या की आशंका जताते हुए शव लेने से इनकार किया

■ परिजनों का आरोप है कि शवों पर चोट के निशान हैं, पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम के बाद मौत का कारण सामने आएगा

आदिल (6) और हसनेन (7) शनिवार शाम चार बजे घरों के बाहर खेल रहे थे। इसके कुछ देर बाद वे गायब हो गए। काफी देर आसपास तलाशने के बाद शाम सात बजे पुलिस को सूचना दी गई। बच्चों को तलाश

किया तो रात 11 बजे दोनों के शव पड़ोस के एक खाली मकान के पानी के टैंक में मिले। पुलिस ने शवों को जवाहिर हॉस्पिटल की मॉर्चरी में रखवाया। रविवार सुबह नौ बजे दोनों बच्चों के मर्डर का शक जाहिर करते

हुए परिजन घर पर बैठ गए। परिजन का कहना है कि आरोपियों को गिरफ्तारी के बाद ही शव लेगे।

बच्चों के रिश्तेदार कमाल खान ने बताया कि एक बच्चे हसनेन के सिर में चोट के निशान हैं। वहीं, आदिल के गले पर ऐसे निशान हैं, जैसे उसका गला दबाया गया हो। दोनों बच्चों की निर्मम हत्या हुई है। इसकी जांच होनी चाहिए। कमाल ने बताया कि जिस टैंक (पानी का टैंक) में दोनों शव मिले उसका ढक्कन बंद था। टैंक में दो फीट एक इंच ही पानी था। जबकि

दोनों बच्चों की लंबाई 3 फीट से ज्यादा है। दोनों का मर्डर कर टैंक में डाला गया है। आदिल के पिता शौकत खान मरसा पैरा टीचर है। आदिल उनका इकलौता बेटा था। जबकि हसनेन के पिता पीरबख्त मजदूरी करते हैं। वह तीन भाइयों में सबसे छोटा था।

वहीं जैसलमेर एसपी सुधीर चौधरी ने कहा इस मामले पर स्पेशल टीम और डीएसटी को लगाया है। परिजन जैसी रिपोर्ट देते वैसे जांच को आगे बढ़ाएंगे। पोस्टमार्टम के बाद मौत के सही कारण पता लग सकेगा।

चलती स्कॉर्पियो में आग लगी, परिवार बाल-बाल बचा



आग लगने चलती स्कॉर्पियो में उठता हुआ धुआं।

भीलवाड़ा, (नि.सं.)। जिले के मंडल थाना क्षेत्र से गुजर रहे नेशनल हाईवे-48 पर अजमेर-भीलवाड़ा के बीच बेरां चौहाने के निकट रविवार सुबह एक बड़ा हादसा टल गया, जिससे एक परिवार के छह सदस्य बाल-बाल बच गये।

जानकारी के अनुसार परिवार वाले अजमेर से सांवरियाजी के दर्शन को जा रहे थे, तभी हाइवे पर दौड़ती उनकी स्कॉर्पियो अचानक भभक उठी और देखते ही देखते आग का गोला बन गई। चालक ने सतर्कता बरतते हुये स्कॉर्पियो रोक दी और सभी लोग सुरक्षित बाहर निकल आये। जानकारी के अनुसार कारकिया अजमेर निवासी शिवराज पुत्र मंगल गुर्जर अपने परिवार के छह

■ स्कॉर्पियो को ब्रेक लगाकर रोका और आनन-फानन में सभी सदस्यों को बाहर निकाला

■ एक ही परिवार के छह सदस्य स्कॉर्पियो से अजमेर से सांवरियाजी के दर्शन को जा रहे थे

सदस्यों के साथ सुबह अजमेर से रवाना हुये थे, सांवरियाजी के दर्शन को जा रहे थे। हाइवे पर दौड़ती स्कॉर्पियो बेरां गांव के पास पहुंची थी,

तभी अचानक स्कॉर्पियो से धुआं और आग की लपटें उठने लगीं। यह देखकर स्कॉर्पियो को ब्रेक लगाकर रोका और आनन-फानन में सभी सदस्यों को स्कॉर्पियो से बाहर निकाला। इसके तुरंत बाद आग ने विकराल रूप ले लिया और देखते ही देखते स्कॉर्पियो आग की लपटों से घिर गई और चंद मिनटों में ही कार पूरी तरह जलकर राख हो गई। इसकी सूचना दमकल व पुलिस को दी गई। नानकपुरा चौकी से पुलिस जांबा व दमकल वाहन मौके पर पहुंचा और आग पर काबू पाया। आग के कारण अभी स्पष्ट नहीं हो पाये हैं। कार में दो पुरुष, दो महिलायें व दो बच्चे सवार थे। आग से किसी को कोई हताहत नहीं हुआ।

आरएएस तरु सुराणा का अंतिम संस्कार किया

उदयपुर, (कासं)। आरएएस अधिकारी तरु सुराणा का रविवार को नया आँखों से अंतिम संस्कार किया गया। उदयपुर में पंचवटी स्थित उनके आवास से उनकी अंतिम यात्रा रवाना हुई जिसमें बड़ी संख्या में शहरवासी शामिल हुए। शहर के अशोक नगर स्थित मोक्षधाम पर सुराणा की पार्थिव देह को उनके भाई शुभन और परिवार के सदस्यों ने मुखार्चन किया।

अशोक नगर स्थित मोक्ष धाम पर उनके अंतिम संस्कार में उदयपुर कलेक्टर अरविंद कुमार पोसवाल, राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अध्यक्ष महावीर खराडी, आरएएस अधिकारी दीपेंद्र सिंह राठौड़, राजीव द्विवेदी, शैलेष सुराणा, जितेंद्र ओझा, कीर्ति राठौड़, श्वेता फगंडिया, प्रदीप सांग्राम, ओपी जैन, बांसवाड़ा से अतिरिक्त संभागीय

■ डेंगू से मौत के बाद तरु सुराणा के शव को चेन्नई से लाया गया

आयुक्त गौरव बजाड़, गीतेश श्री मालवीय, आरपीएस अनंत कुमार, राजसमंद एसडीएम ब्रजेश गुप्ता, सुरेश नाहर सहित कई अधिकारी मौजूद रहे। अंतिम यात्रा में शहर के प्रबुद्धजन, जनप्रतिनिधि और अधिकारी शामिल हुए। सुराणा के निधन पर शहर के अधिकारियों, जनप्रतिनिधियों ने शोक जताया। 42 वर्षीय सुराणा का डेंगू से शनिवार सुबह चेन्नई में निधन हो गया था। पंजीयन विभाग डीआईजी के पद सेवानिवृत्त रहते हुए सुराणा का पिछले 22 दिन से उपचार चल रहा था।

महिला के साथ गैंगरेप, मामला दर्ज

जोधपुर, (कासं)। फलोदी जिले के चाखू थाने में एक महिला ने अपने साथ गैंगरेप का मामला दर्ज हुआ है। आरोप है कि महिला को एक जगह बंधक बनाकर उसके साथ रेप किया गया। इसको लेकर पांच आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है। मामले की जांच थाना अधिकारी हनवंत सिंह कर रहे हैं। फिलहाल किसी आरोपी को गिरफ्तारी नहीं हुई है। घटना पिछले माह की है, लेकिन रिपोर्ट अब दी गई है।

थाने में दी रिपोर्ट में महिला ने बताया कि 10 सितंबर की घटना है। यहां पर पांच लोग उसे अपने साथ लेकर चले गए। उसे एक जगह पर बंधक बना दिया। बाद में उसके साथ मारपीट कर रैप किया गया। अब इस मामले को लेकर महिला ने थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई है। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

पिस्तौल व कारतूस के साथ एक गिरफ्तार

अजमेर, (नि.सं)। अजमेर जिले के मदनगंज-किशनगढ़ के गांधीनगर थाना पुलिस ने किशनगढ़ हरमाड़ा मार्ग पर नाकाबंदी के दौरान एक कार ड्राइवर के कब्जे से अवैध देशी पिस्तौल और तीन जिंदा कारतूस बरामद किए हैं। पुलिस ने आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज कर कार चालक को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

पुलिस की प्रारंभिक पूछताछ में आरोपी ने बताया कि उसने यह अवैध देशी पिस्तौल और कारतूस को कुछ दिन

पहले अजमेर में मारपीट का वीडियो वायरल करने वालों से दुश्मनी के कारण खरीदे थे। पुलिस ने कार जप्त कर मामले की जांच शुरू कर दी है। गांधी नगर थानाधिकारी सुरेश कुमार सोनी से प्राप्त जानकारी के अनुसार थाना स्तर पर गठित टीम को मुखबिर से सूचना मिली थी कि कोई व्यक्ति किशनगढ़ से हरमाड़ा की ओर अवैध हथियार लेकर जा रहा है। इस सूचना के आधार पर नाकाबंदी की गई और सदिध वाहन की तलाशी ली गई। इस सच ऑपरेशन में धनराज उर्फ

कन्हैया तिवारी (28) की कार की तलाशी के दौरान एक देशी पिस्तौल और तीन जिंदा कारतूस बरामद किए गए। पुलिस ने आरोपी के कब्जे में अवैध पिस्तौल और कारतूस बरामद कर उसके कार भी जप्त कर ली। पूछताछ के दौरान धनराज उर्फ कन्हैया तिवारी ने बताया कि अजमेर में उसके साथ पहले मारपीट हुई थी और उसकी हत्या कर दी गई। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

“स्टेकहोल्डर्स कॉन्क्लेव” का आयोजन आज

उदयपुर/जयपुर। विश्व मानक दिवस 2024 के उपलक्ष्य में भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस), राजस्थान, और मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय (एमएलएसयू), उदयपुर के संयुक्त तत्वाधान में सात अक्टूबर को सुबह 10 बजे से बप्पा रावल ऑडिटोरियम, में एक “स्टेकहोल्डर्स कॉन्क्लेव” का आयोजन किया जा रहा है। विश्व मानक दिवस को प्रतिवर्ष 14 अक्टूबर को उन विशेषज्ञों को सम्मानित करने के लिए वैश्विक रूप से मनाया जाता है, जो स्वीच्छक अंतरराष्ट्रीय मानकों को विकसित करते हैं और उनके द्वारा यह सुनिश्चित करते हैं कि उपभोक्ताओं को मिलने वाली उत्पाद और सेवाएं सुरक्षित, विश्वसनीय और उच्च गुणवत्ता की रहें। इस अवसर पर आयोजित “स्टेकहोल्डर्स कॉन्क्लेव” के समारोह में डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे।

नवरात्र का पर्व सनातनियों के लिए विशेष : गजेंद्र सिंह शेखावत

जोधपुर, (कासं)। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि नवरात्र एक महत्वपूर्ण पर्व है, जिसे सनातन धर्म में बड़ी सहजता से परिभाषित किया है। रविवार को सर्किट हाउस में पत्रकारों से बातचीत में शेखावत ने कहा कि नवरात्र का पर्व हमारे लिए विशेष महत्व रखता है। यह भारतीय सनातन समय परंपरा का हिस्सा है, जो साल में ऋतु संक्रमण के काल के समय में मनाया जाता है। यह पर्व नौ दिनों तक चलता है, जब एक ऋतु से दूसरी ऋतु में परिवर्तन होता है। इस पर्व का भौतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व जुड़ा हुआ है। इस दृष्टिकोण से यह निश्चित रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि भौतिक दृष्टिकोण

- केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने जनसुनवाई की
- शेखावत ने गांव सुरपुरा जाकर स्व. प्रियंका विश्नीई के परिजनों को सात्वना प्रदान की

से जब ऋतु का परिवर्तन हो रहा है तो हमें अपने आहार और दिनचर्या में भी बदलाव लाने की आवश्यकता होती है। इसके लिए संक्रमण के इस काल में ब्रत और उपवास की व्यवस्था हमारे ऋषियों ने स्थापित की है। अगर हम आध्यात्मिक दृष्टिकोण से देखें तो नौ दिन के समय में साधना का विशेष महत्व है, जिसे हमारे ऋषियों ने स्थापित किया। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी, विभिन्न प्रांतों में इस पर्व को उल्लास के साथ मनाया जाता है। सर्किट हाउस में जनसुनवाई में

केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने दूरदराज से आए ग्रामीणों की समस्याओं को सुना और उनके समाधान के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। उन्होंने जोधपुर में जिला और पुलिस प्रशासन से देखें तो नौ दिन के समय में साधना का विशेष महत्व है, जिसे हमारे ऋषियों ने स्थापित किया। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी, विभिन्न प्रांतों में इस पर्व को उल्लास के साथ मनाया जाता है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी, विभिन्न प्रांतों में इस पर्व को उल्लास के साथ मनाया जाता है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी, विभिन्न प्रांतों में इस पर्व को उल्लास के साथ मनाया जाता है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी, विभिन्न प्रांतों में इस पर्व को उल्लास के साथ मनाया जाता है।

सतर्क के साथ संवेदनशील होने पर भी संवाद किया। शेखावत ने फलोदी में ग्राम पंचायत बजरंग नगर के गांव सुरपुरा जाकर राजस्थान प्रशासनिक सेवा की अधिकारी रही स्व. प्रियंका विश्नीई के परिजनों से मुलाकात कर उन्हें सात्वना प्रदान की। उन्होंने कहा कि प्रियंकाजी एक होनहार अधिकारी थीं, जिन्होंने कम समय में अपने कार्य से सभी को प्रभावित किया था। वहीं जोधपुर से सड़क मार्ग फलोदी के लिए रवाना हुये तो मार्ग में ओसियां, लोहाबंद फलोदी में विविध स्थानों पर कार्यांतों से मिले। बाद में फलोदी स्थित जांबा जाकर भगवान जंबेश्वर की तपोस्थली पर धोक लगाई। मन्दिर में दर्शन कर साधु-संतों का आशीर्वाद प्राप्त किया।

खैरथल-तिजारा कलेक्टर के नाम से साइबर ठगी की कोशिश

खैरथल, (नि.सं)। खैरथल-तिजारा जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने फर्जी व्हाट्सएप आईडी बनाकर साइबर ठगी करने का मामला सामने आने पर खैरथल और भिवाड़ी एसपी को शिकायत दर्ज कराई है। कलेक्टर की शिकायत पर जिला साइबर टीम आईपी एड्रेस और अन्य तकनीकी माध्यम से आरोपी को ट्रेस करने की कोशिश में लगी है।

खैरथल-तिजारा जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने बताया कि साइबर ठगी ने उनके नाम व फोटो से फर्जी आईडी बनाकर अधिकारियों व परिचितों से साइबर फ्रॉड की कोशिश की है। उन्होंने बताया साइबर ठगी करने वालों ने एक फर्जी विदेशी व्हाट्सएप नंबर के जरिए अकाउंट बनाया हुआ है। जिस फर्जी

- साइबर ठगी ने कलेक्टर के नाम व फोटो से फर्जी आईडी बनाकर अधिकारियों व परिचितों से साइबर फ्रॉड की कोशिश की
- जिस फर्जी नंबर से आईडी बनाकर साइबर ठगी अधिकारियों एवं परिचितों को मैसेज भेज रहे हैं, वह उज्बेकिस्तान का है

साइबर फ्रॉड की कोशिश की है। उन्होंने बताया साइबर ठगी करने वालों ने एक फर्जी विदेशी व्हाट्सएप नंबर के जरिए अकाउंट बनाया हुआ है। जिस फर्जी

नंबर से आईडी बनाकर साइबर ठगी अधिकारियों एवं परिचितों को मैसेज भेज रहे हैं वह उज्बेकिस्तान का है। साइबर ठगी का मामला सामने

आने पर जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने खैरथल एसपी मनीष कुमार एवं भिवाड़ी एसपी ज्येष्ठा मैत्रेयी को इस साइबर ठगी फ्रॉड घटना की जानकारी दी है। वहीं कलेक्टर ने जिला स्तरीय अधिकारियों के व्हाट्सएप ग्रुप व अन्य परिचितों को मैसेज कर साइबर ठगी से सावधान रहने की अपील की है। उन्होंने कहा है कि उनके नाम और फोटो वाले व्हाट्सएप मैसेज और फोन आने पर कोई रिस्काई या पैसे नहीं देवे। यह फर्जी व्हाट्सएप नंबर उज्बेकिस्तान का है। साइबर ठगी की ओर से कई परिचित

और रिश्तेदार अधिकारियों के पास मैसेज भेजे गए हैं। जिला कलेक्टर किशोर कुमार की रिपोर्ट पर खैरथल तिजारा जिला साइबर टीम आईपी एड्रेस और अन्य तकनीकी माध्यम से आरोपी को ट्रेस करने की कोशिश में लगी है। उल्लेखनीय रहे कि खैरथल तिजारा जिला पुलिस की ओर से जिले में साइबर ठगी मामले को लेकर एंटीवायरस अभियान चलाया हुआ है। इस एंटीवायरस अभियान के तहत पुलिस ने बड़ी संख्या में मेवात से साइबर फ्रॉड करने वाले आरोपियों को पकड़ा है।

सड़क मरम्मत सहित सात सूत्रीय मांगों को लेकर दूध टैंकरों की आवाजाही रोकी

अजमेर, (कासं)। सड़क मरम्मत सहित सात सूत्रीय मांगों को लेकर रविवार को दौराई के ग्रामीणों ने सरस डेयरी के दूध टैंकरों की आवाजाही रोक दी। सैकड़ों की संख्या में ग्रामीणों ने डेयरी व जिला प्रशासन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन भी किया। प्रशासनिक अधिकारियों और पुलिस ने समझाइश की, लेकिन वे नहीं माने। इस दौरान बड़ी संख्या में पुलिस बल मौजूद रहा। पंचायत दौराई से प्रतिनिधि मंडल के रूप में सरपंच प्रतिनिधि हंसराज चौधरी ने बताया कि पूर्व में सात सूत्री मांगों को लेकर एडीएम सिटी को ज्ञापन सौंपा और 5 अक्टूबर तक ग्रामीणों ने

■ दौराई गांव के ग्रामीणों ने सरस डेयरी के खिलाफ प्रदर्शन किया

दौराई से अजमेर डेयरी के दूध के टैंकर नहीं निकलने का अल्टीमेटम भी दिया था। लेकिन अजमेर डेयरी प्रशासन पर इसकी जु तक नहीं रेंगी। ग्रामीणों ने बताया कि साल 2020 में अजमेर सरस डेयरी के भारी वाहन निकालने से दौराई गांव के मुख्य सड़क मार्ग के क्षतिग्रस्त हो जाने पर डेयरी द्वारा क्षतिग्रस्त सड़क और पुलिया को

मरम्मत करवाने अथवा क्षतिपूर्ति राशि ग्राम पंचायत में जमा करवाने का भी आश्वासन दिया। सड़क मार्ग की मरम्मत करवाने की बजाय अपने दूध वाहनों का मार्ग बदलकर खानपुरा तालाब के पीछे वाले रास्ते से जाना शुरू कर दिया। इस क्षतिग्रस्त मार्ग की कोई सुध नहीं ली। इस दौरान ग्रामीण डेयरी के एम्पटी से मिलने गए तो उन्होंने उनसे कोई बात तक नहीं की। ग्रामीणों ने कहा कि यदि उनकी मांगी समय रहते पूरी नहीं की गई तो आगे उग्र प्रदर्शन किया जाएगा। हंसराज चौधरी ने बताया कि प्रशासन के समक्ष सात सूत्रीय मांग रखी गई है, जिसमें दौराई तबीजी संपर्क सड़क

पर नदी पर बनी पुलिया की मरम्मत टुकड़ों में कवाई जाएं जिससे निर्माण के दौरान आवाजाही बाधित न हो, 3 महीने के बाद डेयरी के वाहनों को किसी अन्य मार्ग से निकालने की व्यवस्था करने, पूर्व में क्षतिग्रस्त सड़क को क्षतिपूर्ति राशि ग्राम पंचायत में जमा करवाई जाने, डेयरी के वाहन चालकों को तेज गति में वाहन नहीं निकालने, डेयरी फंड से प्रतिवर्ष दौराई में 10 लाख के विकास कार्य कराए जाने, डेयरी में 25 फीसदी कर्मचारी दौराई के रखे जाने को प्रार्थमिकता दिए जाने, पिछले 10 साल से कार्यरत कर्मचारियों को नियमित किए जाने सहित विभिन्न मांगें रखी।

“रन फॉर क्वालिटी” दौड़ कल

उदयपुर/जयपुर। विश्व मानक दिवस 2024 के उपलक्ष्य में भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस), राजस्थान, और मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय (एमएलएसयू), उदयपुर के संयुक्त तत्वाधान में आठ अक्टूबर को फतेहसागर झील, उदयपुर पर “रन फॉर क्वालिटी” दौड़ का आयोजन होगा। विश्व मानक दिवस को प्रतिवर्ष 14 अक्टूबर को विशेषज्ञों को सम्मानित करने के लिए वैश्विक रूप से मनाया जाता है। इस दौड़ का फ्लैग ऑफ मना लाता वरदा, सांसद (मुख्य अतिथि), अरविंद कुमार पोसवाल, आईएसएस, कलेक्टर (विशिष्ट अतिथि), कनिष्ठा कालिया, निदेशक और भारतीय मानक ब्यूरो राजस्थान और डॉ. अविनाश पंवार, नोडल अधिकारी, आईटी और निदेशक, कंप्यूटर केंद्र, एमएलएसयू द्वारा किया जायेगा।

वरदा, सागवाड़ा और आसपुर में चोरों ने ज्वेलर्स की दुकानों को निशाना बनाया

चोर दुकान के शटर को तोड़कर लाखों रुपए के चांदी के जेवर चुरा ले गए

डूंगरपुर, (नि.सं)। आमजन में सुरक्षा और अपराधियों में डर का स्लोगन पर काम करने वाले राजस्थान पुलिस को एक ही रात में चोरों ने चैलेंज देते हुए तीन बड़े कस्बों में ज्वेलर्स की दुकान पर चोरों की वारदात कर डाली। डूंगरपुर जिले के वरदा, सागवाड़ा और आसपुर थाने के अंतर्गत चोरों ने ज्वेलर्स की दुकान को निशाना बनाते हुए चांदी के जेवरवात चुराकर ले गए। तीनों दुकानों की सीसीटीवी फुटेज में चोर बर्तौर कार में बैठकर आते दिखाई दिये। सागवाड़ा थाने से करीब 500 मीटर की दूरी पर मुख्य सड़क पर स्थित संजयत वाटिका के पास स्थित एक ज्वेलरी शॉप को बीती रात चोरों ने अपना निशाना बनाया। चोर शॉप के शटर को तोड़कर हजारों रुपए के चांदी के जेवर

चुरा ले गए। सागवाड़ा शहर के ज्वेलरी व्यापारी सुमित पंचाल ने बताया कि शनिवार रात को शॉप को बंद करके गया था। सुबह सूचना मिली कि दुकान का शटर टूटा हुआ है। मौके पर पहुंचकर देखा कि शॉप का शटर टूटा हुआ था। वहीं अंदर कांटेटर पर लगे ज्वेलरी डिस्प्ले भी टूटा हुआ था। डिस्प्ले में लगे हजारों रुपए के चांदी के जेवर गायब थे। चोर शॉप से हजारों के चांदी के जेवर चुरा ले गए। इधर चोरी की पूरी वारदात दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हुई है। जिसमें तीन चोर दिखाई दे रहे हैं। पीड़ित ज्वेलर ने सागवाड़ा थाना पुलिस को चोरी की रिपोर्ट दर्ज करवाते हुए सीसीटीवी फुटेज उपलब्ध करवाया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इसी प्रकार वरदा थाने से 300

■ कार में बैठकर चोरी करने आई थी गैंग, पुलिस अब सीसीटीवी के भरोसे

■ वरदा और सागवाड़ा कस्बे में पुलिस थाने से 800 मीटर की दूरी पर हुई चोरी की वारदात

मीटर दूर मुख्य सड़क पर एक ज्वेलरी शॉप में भी चोरी की वारदात हुई। कार में आए चोरों ने दुकान का शटर तोड़कर अंदर चुसे और कांटेटर से चिल्लर

चुराई। सोने चांदी के जेवरवात चुराते इससे पहले लोगों की आवाज सुनकर चोर भाग गए। रविवार सुबह घटना की जानकारी लगने पर लोगों ने आक्रोश जताया। वहीं चोरी घटना यहां पर भी सीसीटीवी में कैद हुई। यहां पर वहीं तीन चोर नजर आ रहे हैं। वहीं चोरी में इस्तेमाल कार भी साफ दिखाई दे रही है। चोरों वरदा निवासी अक्षय पुत्र विनोद गोवाडिया ने एक आईआर दर्ज कराई है। जिसमें 10 साल 12.10 बजे दुकान के बाहर रोड पर खड़ी कार से निकले अज्ञात बदमाश दुकान का नक्का तोड़कर अंदर चुसे। कांटेटर से चिल्लर और कुछ रुपए निकाल लिए। इसके बाद चोरों ने लोपी के आने की आवाज सुनकर भाग गए। करीब 20 मिनट बाद ही 12.30 बजे

चोर भाग गए। इससे बचाने में सोने चांदी की दूसरी ज्वेलरी रुक गई। इन्हीं चोरों ने तीसरी चोरी आसपुर थाना क्षेत्र के पूंजपुर गांव में तड़के साढ़े तीन बजे एक ज्वेलर्स की दुकान को निशाना बनाया। पुंजपुर चौकी के पास स्थित मुख्य बाजार में स्थित जयंतीलाल पुत्र कचरुलाल सोनी की ज्वेलर्स की दुकान के मुख्य शटर का लोहे के सरिए से ऊंचा करके तीन अंदर प्रवेश किया। दुकान में रखी करीब 6 किलो चांदी के जेवरवात व एक ग्राहक का आधा ग्राम के कान के झुमके जो रिपेयर करने थे वो चोरी कर ले गए। बदमाशों द्वारा की गई चोरी की पूरी वारदात सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। रविवार को जब व्यापारी दुकान पहुंचा तो ताले टूटे देख उसके होश उड़ गए।

पूर्व मुख्यमंत्री गहलोत के बयान पर कैबिनेट मंत्री का करारा जवाब

खुद मियां फजीहत औरों को नसीहत : जोगाराम पटेल

जयपुर। संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि अशोक गहलोत और कांग्रेस पार्टी को राजस्थान का तेजी से होता विकास हजम नहीं हो पा रहा है और वे मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के प्रदेश के विकास के एजेंडे में अडंगे डालने का काम कर रहे हैं।

पटेल ने कहा कि पेपरलीक के दोषियों पर कार्यवाही, युवाओं को रोजगार, महिलाओं की सुरक्षा, किसानों को सम्मान, जल उपलब्धता के लिए मजबूत फैसले और बिजली में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम और अब 90 हजार नियुक्तियों का कैबिनेट फैसला देख कर अशोक

■ 'किसान मुख्यमंत्री के शानदार काम से बौखलाए गहलोत'

गहलोत की नौद उड़ी हुई है। उन्हें समझ नहीं आ रहा है कि ऐसे शानदार फैसले एक किसान मुख्यमंत्री कैसे तीव्र गति से कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री गहलोत और कांग्रेस अध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा जनता को झूठे बयानों से बर्गलाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन जनता उनके फरेब में आने वाली नहीं है क्योंकि गहलोत और डोटासरा के चेहरे को वो अच्छी तरह

पहचानती है। पटेल ने कहा कि अशोक गहलोत की बातों को सुन कर एक ही कहावत याद आ रही है, खुद मियां फजीहत औरों को नसीहत। अगर पांच साल उन्होंने जनता के कामों पर ध्यान दिया होता तो आज विपक्ष में नहीं बैठना पड़ता। पूरा कार्यकाल सरकार बचाने की जोड़-तोड़ में निकाल दिया सत्ता की कुर्सी बचाने के लिए जयपुर और जैसलमेर के होटलों में सरकार और कांग्रेस के विधायक बन्द करे हुए। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के कारनामों की परतें तो उनके लम्बे आर दिन दिल्ली में जांच एजेंसियों के सामने उभे रहे हैं। इस कारण बौखलाहट में

किसान मुख्यमंत्री को अपमानित करने पर उतारू हो गए हैं। उन्होंने कहा कि गहलोत राजस्थान में लगातार पूरी हो रही बजट घोषणाओं, संकल्प पत्र के 50 प्रतिशत काम पूरे होने से मुख्यमंत्री की बढ़ती लोकप्रियता से ध्यान भटकाना चाहते हैं। कांग्रेस के मौजूदा अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को उन्होंने कैसे अप-डाउन कराई थी, जो जग जाहिर है। कांग्रेस के 5 साल के कारनामों से प्रदेश का विकास डाउन ही नहीं रखातल में चला गया अब मात्र 10 माह में राजस्थान विकास की नई ऊंचाईया छू रहा है।

राज्यपाल ने एस.एम.एस. अस्पताल में मोतियाबिंद का ऑपरेशन करवाया

जयपुर। राज्यपाल हरिभाऊ किसनराव बागड़े ने रविवार को जयपुर के सवाई मानसिंह हॉस्पिटल में अपनी आंख की सर्जरी करवाई। नेत्र रोग विभाग के एचओडी डॉक्टर पंकज शर्मा और उनकी टीम ने राज्यपाल की दाहिनी आंख में हुए मोतियाबिंद का सफल ऑपरेशन किया। इस दौरान उनके साथ एसएमएस मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. दीपक माहेश्वरी, आरयूएएस के वाइस चांसलर डॉ. धनंजय अग्रवाल सहित कई डॉक्टर्स

■ करीब 45 मिनट रुकने के बाद वापस राजभवन लौटे

मौजूद रहे।

डॉ. पंकज शर्मा ने बताया कि राज्यपाल का ऑपरेशन करके उन्हें वापस भेजने में 40 से 45 मिनट का समय लगा। ऑपरेशन के बाद उनकी सभी जांच नॉर्मल है। अब वह बिल्कुल फीट हैं। डॉ. शर्मा ने बताया कि उनकी दाहिनी आंख में मोतियाबिंद था।

इसकी सर्जरी का प्लान किया था। सर्जरी से पहले उनकी तमाम रूटीन ब्लड जांच पहले ही करवा ली थी। ऑपरेशन से पहले आंखें डायलूट होती हैं, जिसे राजभवन में ही किया गया। इसके लिए आंखों में एक ड्रॉप डाली जाती है, जिससे पुतलियां फूलती हैं। उसके बाद ऑपरेशन होता है। ऑपरेशन चक्र भवन स्थित ऑपरेशन थिएटर में किया गया। ऑपरेशन के बाद राज्यपाल और उनकी टीम ने अस्पताल की सेवाओं और मेडिकल स्टाफ की सज्जना की।

450 भक्तों ने लिया श्रील प्रभुपाद आश्रय

जयपुर। जीवन के दुखों को त्यागकर सुख का मार्ग कैसे अपनाया जाए, इस ज्ञान का पथ प्रदर्शन करता है भक्ति वेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद का मार्ग और भक्ति के मार्ग में प्रशस्त होने का रास्ता दिखाता है श्रील प्रभुपाद आश्रय समारोह रविवार को श्री श्री कृष्ण बलराम मंदिर में इस समारोह का आयोजन हुआ जिसमें भक्ति मार्ग की परीक्षा एवं इंटरव्यू पास कर चुके 450 भक्तों ने इस मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा ली। गौरतलब है कि आश्रय लेने वालों में देश के अलग-अलग हिस्सों से भक्तों ने हिस्सा लिया।

मुरलीपुरा में निकला पथ संचलन

जयपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विद्याधर भाग के विजयनगर का विद्यार्थी पथ संचलन रविवार शाम को मुरलीपुरा के शहीद हिम्मत सिंह पार्क केशव शाखा संघस्थान से निकला।

पथ के साथ निकले पथ संचलन में सौ से युवा, किशोर और बाल स्वयं से अधिक स्वयंसेवक शामिल हुए। प्रणव, आनक, शंख, वेणु और झल्लरी से समवेत स्वर में किरण और श्री राम रचना का वादन किया। जगह-जगह विभिन्न समाजों के और संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने पुष्प वर्षा कर पथ संचलन का स्वागत किया। इससे पूर्व संघ स्थान पर महानगर विद्यार्थी कार्यवाह रूप सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों का पथ संचलन समाज में शक्ति जागरण का उद्घोष करता है। पथ संचलन से समाज में ऊर्जा का संचरण होता है। उन्होंने कहा कि शाखा में सद्भाव, संस्कार, समरसता के गुणों विकास होता है और गुण सम्पन्न व्यक्तियों का निर्माण होता है।



सोने की कीमतें बढ़ती ही जा रही हैं फिर भी सबसे बड़े त्यौहार दीपावली व करवा चौथ के लिए खरीदारी शुरू हो चुकी है। लोग अब धन तेरस का इंतजार नहीं करते। नवरात्रि में कोई नई गाड़ी खरीद रहा है तो कोई प्रोपर्टी लेकिन सामने महिलाओं के सुहाग के सबसे बड़े त्यौहार करवा चौथ पर घर की बड़ी महिलाएं अपनी घर की बहुओं को ज्वेलरी खरीदने ले जा रही हैं। विद्याधर नगर में एक ज्वेलरी की दुकान पर करवा चौथ की खरीददारी करती महिलाएं। फोटो : दिनेश भारद्वाज

प्रह्लाद चौधरी अध्यक्ष बने

जयपुर। भारतीय किसान संघ की महानगर की कार्यकारिणी का निर्वाचन किया गया। इसमें प्रह्लाद चौधरी को अध्यक्ष व त्रिलोक सिंह को मंत्री बनाया गया। किसान संघ के प्रांत महामंत्री डॉ. सांवर मल सोलेट ने बताया कि सर्वसम्मति से प्रह्लाद चौधरी को अध्यक्ष, त्रिलोक सिंह को मंत्री, विजय गर्ग को उपाध्यक्ष, अभिलाषा चौधरी को महिला प्रमुख, प्रवीण सेन व प्रेमराज चौधरी को सह मंत्री, डॉ. राजेश को गो

सेवा प्रमुख, विजय को पर्यावरण प्रमुख, प्रदीप को युवा प्रमुख बनाया गया। इससे पूर्व सोलेट ने बताया कि शहर के लोगों को देशी गाय का दूध, शुद्ध सब्जियाँ, अनाज मिले। इसके लिए उत्पादक किसान व उपभोक्ता को जोड़ने पर काम करेंगे। इस अवसर पर नव निर्वाचित अध्यक्ष प्रह्लाद चौधरी ने बताया कि जल्द ही सभी नगरों में भी कार्यकारिणी बनाकर संगठन को मजबूत करेंगे।

रामधुन पर निकाली विधाणी परिक्रमा

जयपुर। गोमेर रोड विधाणी स्थित श्रीगोपाल सागर आश्रम में छह दिवसीय विधाणी परिक्रमा महोत्सव में शुक्रवार को संत श्रीमथिला बिहारी जी के साक्षिप्य में शोभायात्रा निकाली गई। ठाकुर जी की पूजा अर्चना के बाद गोमेर मंदिर से शोभायात्रा रवाना हुई। परिक्रमा में जुगल सरकार के स्वरूप की झंकी मुख्य आकर्षण रही। हजारों श्रद्धालु झंडा मंजरी बजाते हुए नाचते गाते नजर आए।

निवेशकों को आकर्षित करने के लिये सिंगापुर इन्वेस्टर मीट कल

जयपुर। 'राइजिंग राजस्थान' ग्लोबल इन्वेस्टमेंट सम्मेलन 2024 के तहत विदेशी निवेशकों, कॉरपोरेट जगत और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को प्रदेश में निवेश हेतु आमंत्रित करने के लिए उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री कर्नल राजवर्धन राठौड़ के

नेतृत्व में राजस्थान सरकार का प्रतिनिधिमंडल 8 अक्टूबर को सिंगापुर इन्वेस्टमेंट मीट में हिस्सा लेने और वहां के गणमान्य व्यक्तियों और व्यापार जगत के आला आधिकारियों से मिलने के लिए सिंगापुर के दौर पर रवाना हुआ है। अपनी चार दिवसीय यात्रा में, राज्य सरकार का प्रतिनिधिमंडल सिंगापुर सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों, सिंगापुर स्थित सार्वजनिक और निजी कंपनियों के प्रतिनिधियों और व्यापार एवं व्यवसाय से जुड़े अन्य स्टेकहोल्डर्स से मुलाकात करेगा। इस दौरान यह प्रतिनिधिमंडल पेट्रोकेमिकल्स, शहरी विकास, जल प्रबंधन, एयरोस्पेस, इलेक्ट्रॉनिक्स, कौशल विकास, बागवानी, स्ट्रैटेजिक इन्वेस्टमेंट और दूरसंचार जैसे क्षेत्रों की कंपनियों से मिलेगा और उन्हें राजस्थान में निवेश करने के साथ-साथ आगामी इन्वेस्टमेंट समिट में भाग लेने के लिए आमंत्रित करेगा। इसके अलावा, यह प्रतिनिधिमंडल सिंगापुर स्थित प्रमुख इकाइयों का भी दौरा करेगा ताकि उनके संचालन और बेस्ट प्रैक्टिसेज को समझा जा सके।

■ प्रतिनिधिमंडल सिंगापुर सरकार और व्यापार जगत के आला अधिकारियों से भी मुलाकात करेगा

उद्योग मंत्री के अलावा, राज्य सरकार के इस प्रतिनिधिमंडल में मुख्य सचिव सुधांशु पंत, चिकित्सा और स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ और राजस्थान सरकार के अन्य वरिष्ठ अधिकारी शामिल हैं। इसके अलावा, अपने सिंगापुर प्रवास के दौरान यह प्रतिनिधिमंडल भारतीय मूल के लोगों और अप्रवासी राजस्थानी समुदाय के लोगों, जिन्होंने वहां नाम और प्रसिद्धि अर्जित की है और देश

एवं राजस्थान को गौरवान्वित किया है, से भी मिलेगा। इसके अलावा, राजस्थान सरकार का यह प्रतिनिधिमंडल भारत के उच्चायुक्त डॉ. शिल्पक अंबुले द्वारा आयोजित एक रात्रिभोज में भी शामिल होगा।

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में आयोजित होने वाले 'राइजिंग राजस्थान' ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 को सफल बनाने के लिए राज्य सरकार बड़े पैमाने पर देशी और विदेशी निवेशकों, संस्थाओं और कॉरपोरेट जगत के शीर्ष अधिकारियों से लगातार बैठकें कर रही है, ताकि आने वाले समय में प्रदेश में बड़े पैमाने पर निवेश हो सके और 'विकसित राजस्थान' के लक्ष्य को पूरा करने की ओर बढ़ा जा सके।

इसके तहत पिछले एक महीने में दिल्ली, मुंबई, सियोल (दक्षिण कोरिया), जापान के टोक्यो और ओसाका, संयुक्त अरब अमीरात के दुबई और अबू धाबी एवं कतर की राजधानी दोहा में इस तरह के इन्वेस्टर रोड शो आयोजित किये जा चुके हैं, ताकि निवेशकों को राजस्थान से जुड़ने, प्रदेश में निवेश हेतु आमंत्रित करने और उन्हें राज्य सरकार द्वारा बनायी गयी निवेशक-अनुकूल नीतियों और अवसरों से अवगत कराया जा सके।

अधिक से अधिक निवेशकों को राइजिंग राजस्थान से जोड़ने का आव्हान किया

जयपुर। शासन सचिव, पशुपालन, गोपालन एवं डेयरी डॉ समित शर्मा की अध्यक्षता में पंत कृषि भवन में रविवार को राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इनवेस्टमेंट समिट 2024 के आयोजन एवं उससे पहले 24 अक्टूबर को प्री समिट में व्यवस्थाओं के क्रियान्वयन हेतु कृषि, उद्यमिकी, पशुपालन, डेयरी एवं संबद्ध विभागों के दायित्वों के निर्वहन के संबंध में बैठक का आयोजन किया गया।



बैठक में डॉ शर्मा ने अधिकारियों से अधिक से अधिक निवेशकों को राइजिंग राजस्थान से जोड़ने और समिट को सफल बनाने के लिए पूरी लगन और मेहनत से काम करने का आव्हान किया। उन्होंने 24 अक्टूबर को जयपुर में आयोजित होने वाली प्री समिट बैठक की तैयारियों के बारे में भी अधिकारियों को निर्देश दिए।

बैठक में कृषि आयुक्त सुश्री चिन्मय, निदेशक कृषि विपणन विभाग राजेश कुमार चौहान, प्रबंध निदेशक राजस्थान कोऑर्परेटिव डेयरी

फेडरेशन श्रुति भारद्वाज, निदेशक मत्स्य विभाग संजिता विश्वा, अतिरिक्त निदेशक पशुपालन विभाग

डॉ आनंद सेजरा तथा डॉ प्रवीण सेन और अन्य संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स के राज्य कार्यालय का उद्घाटन

जयपुर। राजस्थान के एक पसंदीदा निवेश गंतव्य बनने के साथ, यह उपयुक्त ही है कि भारतीय चैंबर ऑफ कॉमर्स जैसा पुराना और प्रतिष्ठित चैंबर ऑफ कॉमर्स की स्थापना अब राजस्थान राज्य में हुई है। इस वर्ष चैंबर का उद्घाटन अनुकूल समय पर हो रहा है, जो राइजिंग राजस्थान इन्वेस्टमेंट समिट के साथ पूरी तरह संरेखित है। यह बात उप मुख्यमंत्री दीक्षा कुमारी ने आज जयपुर में इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स के राजस्थान राज्य कार्यालय के उद्घाटन के अवसर पर कही।

वृद्धा को टक्कर मारी

जयपुर। मोती इंदारी थाना इलाके में घर के बाहर झाड़ू लगा रही बुजुर्ग महिला को एक तेज रफ्तार कार ने टक्कर मार दी। इससे महिला की मौत हो गई। हादसे के बाद चालक कार लेकर भाग निकला। पुलिस के अनुसार आनंदपुरी मोती इंदारी निवासी सूरज देवी घर के बाहर झाड़ू लगा रही थी। इसी दौरान तेज रफ्तार कार ने उसे टक्कर मार दी।

प्रथम स्लॉट में कुल 142 करोड़ की सम्पत्तियों की हुई ई-नीलामी

—कार्यालय संवाददाता— जयपुर। राजस्थान आवासन मण्डल की ओर से विभिन्न आय वर्गों के लिए एक बार फिर प्रीमियम प्रॉपर्टी ऑक्शन शुरू किया गया है। काफी समय बाद शुरू की गई ई-नीलामी को लेकर आमजन में काफी उत्साह देखने को मिला। राजस्थान आवासन मण्डल की ओर से 3 अक्टूबर से 5 अक्टूबर 2024 को आयोजित किए गए प्रीमियम प्रॉपर्टी ऑक्शन में लगभग 142.54 करोड़ की आवासीय व व्यवसायिक सम्पत्तियों का निस्तारण किया गया। जिसके तहत जयपुर, भिवाड़ी, फलीदी, बीकानेर, अलवर, जोधपुर में छोटे व बड़े व्यावसायिक और आवासीय भूखंड तथा निर्मित मकान शामिल हैं। प्रीमियम प्रॉपर्टी ऑक्शन में ई-नीलामी के तहत कुल 54 सम्पत्तियों के निस्तारण से आवासन मण्डल लगभग 142.54 करोड़ रुपए का राजस्व अर्जित करेगा। जिसके तहत जयपुर से 90 करोड़ 69 लाख 59 हजार, जोधपुर से 23 करोड़ 63 लाख 46 हजार, अलवर तथा भिवाड़ी में 27 करोड़ 31 लाख 48 हजार, बीकानेर में 14 लाख



93 हजार और चूक में 64 लाख 38 हजार की आय आवासन मण्डल की होगी। आवासन आयुक्त डॉ. रश्मि शर्मा ने कहा कि राजस्थान आवासन मंडल के प्रति आमजन का विश्वास प्रीमियम प्रॉपर्टी ऑक्शन में भी देखने को मिला है। मण्डल ने लंबे अरसे बाद ही इस नीलामी का व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित किया जिसके फलस्वरूप अधिक संख्या में लोगों ने इस नीलामी

■ त्यौहारी सीजन में हाऊसिंग बोर्ड की प्रीमियम प्रॉपर्टी खरीदने को उम्हें प्रदेशवासी

■ लंबे अरसे बाद हुए प्रीमियम प्रॉपर्टी ऑक्शन में दिखा आमजन का उत्साह : डॉ. रश्मि शर्मा

पशु चिकित्सा संस्थान हुए सम्मानित

जयपुर। स्वच्छता ही अभियान के अंतर्गत साफ सफाई और सुव्यवस्था में उत्कृष्ट आने वाले पशु चिकित्सा संस्थानों को जिला और राज्य स्तर पर प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। यह जानकारी देते हुए विभाग के शासन सचिव समित शर्मा ने बताया कि विश्व पशु कल्याण दिवस के अवसर पर प्रत्येक जिला स्तर पर तीन- तीन और राज्य स्तर पर दस सर्वश्रेष्ठ संस्थानों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया है।

डॉ शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत सभी राजकीय कार्यालयों/संस्थानों की साफ सफाई के संबंध में दिए गए निर्देशों की अनुपालना में सभी पशु चिकित्सा संस्थानों को पूर्ण साफ सफाई और सुव्यवस्था के लिए निर्देश दिए गए थे। निर्देशों का पालन करते हुए अपने-अपने संस्थानों को सुव्यवस्थित करने के लिए सभी संस्थानों के अधिकारियों और कर्मियों ने अपना-अपना योगदान दिया। डॉ शर्मा ने बताया कि अंक आधारित कुछ संकेतकों के आधार पर इस कार्य में उत्कृष्ट संस्थानों का चयन किया गया। उल्लेखनीय है कि राज्य स्तर पर प्रथम स्थान पॉलीक्लिनिक सवाईमाधोपुर को मिला है जबकि दूसरा स्थान चुरू के मलसी पशु चिकित्सालय को मिला।

देवनानी ने माता त्रिपुरा सुंदरी के दर्शन किए

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने रविवार को बांसवाड़ा स्थित माता त्रिपुरा सुंदरी मंदिर में दर्शन और पूजा-अर्चना कर प्रदेश की खुशहाली की कामना की। देवनानी

रविवार को प्रातः जयपुर से वायुयान द्वारा उदयपुर पहुंचे, जहां से वे सड़क मार्ग द्वारा बांसवाड़ा गये। देवनानी रविवार को उदयपुर में रात्रि विश्राम करेंगे।

लूट की योजना बनाते दौ बदमाश गिरफ्तार

एंट्री गैंगस्टर टास्क फोर्स ने मानसरोवर स्थित महिमा सर्किल पर कार्रवाई की



राजस्थान पुलिस की एंट्री गैंगस्टर टास्क फोर्स ने अवैध हथियार के साथ आरोपी सीताराम गुर्जर और रामकुमार सुधार को गिरफ्तार किया।

जयपुर। एंट्री गैंगस्टर टास्क फोर्स पुलिस मुख्यालय की टीम ने जयपुर के मानसरोवर इलाके में महिमा सर्किल स्थित एक चाय की थड़ी पर बैठकर लूट की योजना बना रहे दो बदमाशों को पकड़ कर एक अवैध देशी पिस्टल व 7 जिंदा कारतूस बरामद किए हैं। दोनों बदमाशों को मामले में अग्रिम अनुसंधान के लिए मानसरोवर थाना पुलिस को सौंप दिया गया है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एंट्री गैंगस्टर टास्क फोर्स दिनेश एमएन ने बताया कि टीम को सूचना मिली कि मानसरोवर में महिमा सर्किल स्थित एक चाय की थड़ी पर दो आर्याधिक क्रिस्म के व्यक्ति बैठे हुए हैं। उनके पास अवैध हथियार है। यह लोग किसी संगठित गिरोह के सदस्य हैं। जो किसी बड़ी वारदात को अंजाम दे सकते हैं। एमएन ने बताया कि इस सूचना पर स्थानीय पुलिस के सहयोग से चाय की थड़ी पर बैठे दोनों बदमाशों सीताराम गुर्जर उर्फ सीकू (23) निवासी सुरपालिया नागौर रामकुमार सुधार उर्फ

■ आरोपियों से अवैध देशी पिस्टल और सात जिंदा कारतूस बरामद किए

रामकिशन (18) निवासी जामसर बीकानेर को घेर कर दबोच लिया। दोनों बदमाशों की तलाशी लेने पर सीताराम के पास लोडेड पिस्टल जिसकी मैगजीन में तीन कारतूस एवं रामकुमार सुधार के पास सात जिंदा कारतूस जब्त किए गए। प्रारंभिक पूछताछ में दोनों बदमाशों ने उक्त हथियार लूटपाट के इरादे से नागौर के पांचौड़ी निवासी हरीश चौधरी से लाना बताया। वह अवैध हथियारों का बड़ा तस्कर है। इस कार्रवाई में हेड कॉन्स्टेबल नरेंद्र सिंह व महाबोड़ल की विशेष भूमिका रही। वहीं हेड कॉन्स्टेबल चिंटर सिंह, अफिमन्यु सिंह एवं कॉन्स्टेबल जितेंद्र कुमार का तकनीकी तथा हेड कॉन्स्टेबल महेश कुमार, कॉन्स्टेबल नरेश व चालक सुरेश का सहाय्यक सहयोग रहा।

शोशल मीडिया पर लड़की बनकर लोगों को लूटने वाले गिरफ्तार

जयपुर। भांकरोटा थाना पुलिस ने सोशल मीडिया पर लड़की बनकर युवक से लूटपाट करने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके पास से एक कार और दो मोबाइल भी जब्त किए हैं। इस मामले में गिरफ्तार बदमाशों के तीन साथियों को तलाश कर रही है। थानाधिकारी मनोप कुमार ने बताया कि लक्ष्य गुप्ता ने मामला दर्ज करवाया कि किसी ने उससे लड़की बनकर सोशल मीडिया के माध्यम से बात की और उसे मिलने के लिए जे.के.लक्ष्मीपति विश्वविद्यालय के पास रामचंद्रपुर मिलने बुलाया। आरोपी वहां पहुंचा तो उसे दो युवकों ने पकड़ लिया और मारपीट कर उसे सुनसान स्थान पर ले गए। वहां पर बदमाशों के दो साथी कार लेकर आए और उसका अपहरण कर शहर में घुमाने लगे। इसके बाद उसके मोबाइल के माध्यम से ऑनलाइन 47 हजार 400 रुपए ट्रांसफर कर लिए। इसके बाद उसके पिता को फोन कर उससे 15 लाख रुपए मंगवाने को कहा। मना करने पर आरोपियों ने उसके साथ फिर मारपीट की और खाली कागजों पर साइन करवा लिए।

सार-समाचार

मोनिका व सुमन राज्य टीम में शामिल

पाली,(नि.सं.)। भारतीय बॉक्सिंग संघ एव आरईसी (टापीण विद्युतीकरण निगम) के संयुक्त तत्वाधान में हरियाणा के रोहतक में आरईसी कम्बाइंड नेशनल बॉक्सिंग टैलेंट हंट प्रोग्राम (6-13 अक्टूबर 2024) को आयोजित होगी। जिसने पाली जिले की मोनिका 48 किलो भार वर्ग और सुमन कुमारी 54 किलो भार वर्ग में राजस्थान का प्रतिनिधित्व करेगी। गौरतलब है की इस प्रतियोगिता से पूर्व इण्डिया में दो राष्ट्रीय स्तर के दो टैलेंट हंट प्रोग्राम नोएडा यूपी प्रोताम - 1(23-30 अगस्त) तथा गोवाहटी असम प्रोग्राम - 2 (15-21 सितम्बर) में आयोजित हुए भारतीय बॉक्सिंग संघ इन दोनों प्रतियोगिताओं के टॉप 8 बॉक्सर्स की सूची नेशनल कम्बाइंड बॉक्सिंग प्रोग्राम के लिए जारी की। जिसमें पाली की मोनिका और सुमन कुमारी ने आरईसी बॉक्सिंग प्रोग्राम-1 नोएडा यूपी में आल इंडिया यूथ वर्मस वर्ग टॉप 8 में जगह बना कर इस प्रतियोगिता के लिए क्वालीफाई किया है। दोनों खिलाड़ी कई बार राष्ट्रीय स्तर बॉक्सिंग प्रतियोगिताओं में राजस्थान का प्रतिनिधित्व कर चुकी है। मोनिका हाल ही में वर्ल्ड यूथ बॉक्सिंग चैम्पियनशिप टीम इण्डिया सिलेक्शन ट्रायल में भारत में 4 स्थान पर भी रही है। खिलाड़ियों की उपलब्धि पर राजस्थान बॉक्सिंग संघ सचिव नरेन्द्र कुमार निर्वाण व पाली जिला बॉक्सिंग संघ अध्यक्ष वासुदेव शर्मा ने आगामी प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएं दी। इस मौके पर बॉक्सिंग कोच दिलिप गहलोत,शंकर पटेल, देवेन्द्र दामाी, श्रवन कुमार,नेरेश पांडे, बाबूलाल देवासी, प्रवीण पिहाल,वेदाशा पांडे,तेजस व्यास,चंचल परिहार सहित कई खेल प्रेमी उपस्थित रहे।

तेरापंथ सभा भवन में कार्यक्रम हुआ

पाली, (नि.सं.)। तेरापंथ सभा भवन में अनुग्रह संस्था आचार्य महाश्रमण के शिष्य मुनि सुमति कुमार आदि ठाणा-3 के संदर्भ में 1 र्षक्रम का आयोजन हुआ। अनुग्रह समिति अध्यक्ष सुबुद्धि समदडिया ने बताया,कि अनुशासन आज घर परितार समाज एवं राष्ट्र सभी के लिए आवश्यक है। व्यक्ति पहले स्वयं पर अनुशासन करे,फिर वह दूसरों को अनुशासित करे। आचार्य तुलसी ने एक महत्वपूर्ण उद्धोष दिया था, निज पर शासन फिर अनुशासन। मुनि सुमति कुमार ने अनुग्रह गीत का संगान करते हुए,बताया कि अनुग्रह के नियम हमें अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। आप तेरापंथ धर्म संघ में मर्यादा और अनुशासन के प्राण तत्व है। अनुशासन गीत का संगान करते हुए बताया कि नियम में अनुशासित जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। आज तेरापंथ धर्म संघ में मर्यादा,और अनुशासन ही प्राण तत्व है। मुनि ने स्कूली बच्चों को उद्घोषान देते हुए अनुशासन ही प्राण तत्व है। स्कूली बच्चों को उद्घोषान देते हुए अनुशासन में रहने के लिए अनुग्रहों के संकेत्यों को अपनाने की प्रेरणा दी। कल 7 अक्टूबर सोमवार को तेरापंथ सभा भवन में स्कूलों के बच्चों के साथ जीवन विज्ञान दिवस मनाया जाएगा। अनुग्रह क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2024 का जिला स्तरीय प्रतियोगिता का आयोजन अनुग्रह समिति द्वारा 7 अक्टूबर को तेरापंथ भवन में प्रातः 10 बजे किया जा रहा है। समस्त स्कूलों के कार्यक्रम में अध्यक्ष सुबुद्धि समदडिया,शिखरचंद चोडंडिया,राजेन्द्र धोका,चन्द्रा खंडेडक का सहयोग रहा।

हैदराबाद के विद्यार्थी जैसलमेर पहुंचे

जैसलमेर, (नि.सं.)। हैदराबाद के विकास द कॉन्सेप्ट सीबीएसई स्कूल के सैकड़ों विद्यार्थियों ने रविवार को शहर के गडौसर सरोवर,सोनार झुं, पटवा हवेली, दीवान सालमसिंह मोहता हवेली,दीवान नथमल हवेली का शैक्षणिक विजिट किया। अंग्रेजी ज्यदा और हिंदी भी जानने, समझने वाले विद्यार्थियों का पटवा हवेली के अग्रभाग में पीत पाषाण पर चित्रकारों द्वारा बारीकी से ऊंकेरे गए चिड़िया, मोर, तोता, कबूतर को देखकर मन प्रसन्न हो उठा। स्टूडेंट नर्दिनी ने बताया कि पीले पत्थर पर इतनी बारीकी और इतनी बहुतायत से ऊंकेरे गए चित्र मेरे द्वारा अन्य कहीं नहीं देखे गए। छात्रों ने रेतिले धोरों पर रेगिस्तान के जहाज ऊंट की सवारी की और धोरों से डूबते हुए सूरज को देखा। शिक्षकों ने बताया कि विकास स्कूल छात्रों को "अन्वेषण, खोज, सीखना, लागू करना, विश्लेषण करना और सृजन करना" के लिए एक अद्भुत मंच प्रदान करता है। हमने बुनियादी ढांचे, शिक्षा में प्रौद्योगिकी, शिक्षण पद्धत और दृष्टिकोण के क्षेत्र में इसकी स्थापना के बाद से काफी बदलाव किया है।

जीनगर समाज ने ध्वजारोहण किया

बालोतरा, (नि.सं.)। नवरात्रि के पावन अवसर पर जीनगर समाज व्यास गोत्र के भक्तों द्वारा गणपति मंदिर बालोतरा से पनघट रोड स्थित श्री आई माताजी बडेर मंदिर तक ढोल-गागाड़ी के साथ ध्वजा लेकर भव्य शोभायात्रा निकाली गई। यात्रा के समापन पर मंदिर के शिखर पर ध्वजा चढ़ाई गई। इस अवसर पर पुजारी लाखाराम व्यास ने बताया कि यह ध्वजा चढ़ाने की परंपरा नवरात्रि के दौरान विशेष महत्व रखती है, जो मां आई माताजी के प्रति भक्तों की अदृष्ट अर्द्धा और भक्ति को दर्शाती है। उन्होंने कहा कि इस धार्मिक आयोजन से समाज में समर्पण और एकता की भावना को बल मिलता है। बाबूलाल व्यास ने यह भी बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देना है, जिससे आने वाली पीढ़ियों को इन परंपराओं से जोड़कर रखा जा सके। इस दौरान नारायण व्यास, रामेश्वर व्यास, चंपालाल व्यास, घेवर चंचल व्यास, डूंगर व्यास, भंवर लाल व्यास, रामेश्वर व्यास, भेराराम व्यास, नरपत व्यास, अशोक व्यास, राजेन्द्र व्यास, महिलाएं व पुरुष उपस्थित रहे।

जवाई जालोर के लिए जीवनदान : बोरली

जालोर, (कासं)। भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष श्रवणसिंह राव बोरली ने रविवार को राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को पत्र लिखकर, जालोर जिले में गिरते हुए भूजल स्तर में वृद्धि को लेकर पत्र लिखा। उन्होंने पत्र में बताया कि जालोर जिले के विभिन्न क्षेत्रों में भूजल स्तर निरंतर गिरता जा रहा है, जिससे क्षेत्र के किसानों एवं आमजन को पानी की गंभीर समस्या का सामना करना पड़ता है। गर्मी के मौसम में जल संकट और भी विकराल हो जाता है, जिससे जलमय उत्पादन एवं पीने के पानी की कमी बढ जाती है उन्होंने लिखा कि जालोर जिले में भूजल स्तर की इस कमी को सुधारने के लिए जवाई बांध से पेयजल हेतु पानी के अतिरिक्त पानी को जवाई नदी में छोड़ा जाए, जिससे न केवल भूजल स्तर में वृद्धि होगी, बल्कि जालोर जिले के किसानों को राहत भी मिलेगी। यह कदम न केवल कृषि उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक होगा, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

आदर्श विद्या मंदिर धोरीमन्ना के बच्चे छाप

धोरीमन्ना, (नि.सं.)। स्थानीय विद्या भारती द्वारा संचालित विद्यालयों का जिला स्तरीय विज्ञान मेला का आयोजन आदर्श विद्या मंदिर बाडमेर में रविवार को संपन्न हुआ। इसमें विज्ञान प्रदर्शन, विज्ञान प्रयोग, विज्ञान प्रश्न मंच आदि की प्रतियोगिता रखी गई। विज्ञान आचार्य बाबूलाल जांगिड ने बताया कि आदर्श विद्या मंदिर उच्च माध्यमिक धोरीमन्ना के कुल 17 प्रतिभागियों में भाग लिया। उसमें 14 भैया बहनों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया और 3 प्रतिभाग्य द्वितीय स्थान पर रहे। प्रथम व द्वितीय स्थान पर रहने वाले भैया बहनों को शिक्षण समिति बाडमेर द्वारा सम्मानित किया गया। प्रधानाचार्य नारायण दास माली ने बताया कि प्रथम स्थान पर रहने वाले भैया बहनों 13 अक्टूबर को प्रांत स्तरीय विज्ञान मेला नोखा(बीकानेर) में बाडमेर जिले का प्रतिनिधित्व करेंगे।

सेवानिवृत्त रोडवेज कर्मचारियों की बैठक

जालोर, (कासं)। सेवानिवृत्त रोडवेज कर्मचारियों की मासिक बैठक छोगसिंह की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक को सम्बोधित करते हुए सरक्षक जयसिंह ने कहा कि रोडवेज में लगातार पुराने कर्मचारी सेवानिवृत्त हो रहे है। जो करीब 2024 में 95 प्रतिशत कर्मचारी सेवापूर्ण कर लेंगे, लेकिन बजट अध्यक्षता में सिर्फ 165. भर्ती की घोषणा की गई जो कि उट के मुंह में जीरो साबित होगा। उन्होंने कहा कि आज निगम बडे में 2 हजार बर्सा की जरूरत है वहाँ सिर्फ 51. बर्सा की स्वीकृति जारी की। उपाध्यक्ष हिगलाजदान ने बताया कि नगर परिषद के सामने यात्रियों के लिए सुविधा नहीं होने से बारिश के दिनों में परेशानी होती है।

भागवत कथा का शुभारंभ 8 को

जोधपुर, (कासं)। गौ ऋषि स्वामी ज्ञानस्वरूपानन्द अक्रिय महाराज के सान्निध्य तथा राधारानी सेवा संस्थान, जोधपुर के तत्वावधान में पार्श्वनाथ नगर पार्श्वनाथ नगर, भदवासिया, में श्री मद्भागवत कथा का 8 अक्टूबर को शुभारंभ होगा। भागवतवाच्य पंडित दामोदर भारद्वाज वृंदावन वाले का वाचन करेंगे। कथा में महन्त अचलानंद गिरी महाराज तथा संत राजेन्द्रदास महाराज का सान्निध्य रहेगा। यह कथा 8 से शुरू होगी जबकि पूर्णाहुति 14 अक्टूबर को होगी। इसी कड़ी में 8 अक्टूबर सुबह कलशा यात्रा निकाली जाएगी। कलश यात्रा प्रातः 10.15 बजे से नवदशरथ महादेव मन्दिर से स्वाना होकर पार्श्वनाथ नगर कथा स्थल तक जायेगी।

शिक्षा के प्रति जागरूकता से ही विकास संभव : बेनीवाल

बालोतरा, (नि.सं.)। सांसद उम्मेदाराम बेनीवाल ने बाडमेर संसदीय क्षेत्र के शिव विधानसभा क्षेत्र के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सियाणी में समाजसेवी एनआरआई रमन सारण की ओर से निर्माण कराए गए कक्षा कक्षों के उद्घाटन समारोह में सांसद बेनीवाल ने भामाशाह रमन सारण का आभार व्यक्त किया।

बेनीवाल ने कहा कि भामाशाहों के सहयोग से शैक्षणिक संसाधनों की कमियों को दूर करने में विशेष योगदान है। सामाजिक जागरूकता के साथ भामाशाहों को आगे आना चाहिए, जिससे हमारे क्षेत्र में संसाधनों से जुड़ना नहीं पड़े और शैक्षणिक माहौल बेहतर बने आधुनिक युग में परिस्थितियों के अनुसार जीवन और समाज के उथान, विकास के लिए शिक्षा की विशेष महत्व है हमें विशेष तौर पर निरंतर फोकस करना होगा। बालिका शिक्षा पर भी विचार करना होगा हमारे देश में बेटियाँ क्षेत्र का नाम रोशन कर रही है।

सांसद बेनीवाल ने विद्यालय में भवन और शिक्षकों की कमी को देख आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए डिजिटल स्मार्ट क्लास रूम मय दो कक्षा कक्ष की घोषणा की।

इस दौरान पूर्व कैबिनेट मंत्री हेमराम चौधरी ने संबोधित करते हुए कहा कि हमें जीवन और समाज को जागरूक होकर शिक्षा को बढ़ावा दें वर्तमान समय में शिक्षा की विशेष आवश्यकता है।

कार्यक्रम में सियाणी मठ महाधीश आनन्द पुरी महाराज, कांग्रेस ब्लॉक अध्यक्ष सरपंच देवाराम आर्य, सरपंच जुगताराम भादू, जिला परिषद सदस्य नरपतराज मूंड, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी



सांसद उम्मेदाराम बेनीवाल, पूर्व कैबिनेट मंत्री हेमराम चौधरी ने पौधारोपण किया।

फोटो-राष्ट्रदूत

पत्राराम चौधरी, स्थानीय सरपंच मूलीदेवी मेघवाल, भामाशाह मूलसिंह सहित कई जने मौजूद रहे।

इससे पूर्व सांसद बेनीवाल दारूल उलूम फेजे गौसिया संस्थान, खारची में वार्षिकोत्सव एवं प्रतिभा सम्मान समारोह कार्यक्रम में शामिल हुए। सांसद बेनीवाल ने कहा कि सीमावर्ती क्षेत्र और मुस्लिम समुदाय में शिक्षा के प्रति जागरूकता से हर क्षेत्र में सकारात्मक सोच से प्रतिभाओं की उपलब्धियाँ समाज में शैक्षणिक जागृति का परिणाम है। जिस तरह से हम धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हैं, उसी प्रकार हमें शिक्षा के प्रति जागरूक होकर आर्थिक योगदान देना चाहिए।

जिससे शैक्षणिक वातावरण बेहतर बने और विस्तार हो सके। सीमावर्ती क्षेत्र में सदियों से चलती आ रही भाईचारे और अपणायत की भावना व एकता की मिसाल निरंतर बनी रहे इसके लिए सामाजिक तौर पर जब हम सजग रहकर आपस में मिलजुलकर रहेंगे तभी विरोधी हमारी ताकत के सामने घुटने टेकने को मजबूर होंगे।

इस दौरान समारोह में संस्थान के 30 पूर्व छात्रों का विभिन्न सरकारी सेवाओं में चयन होने पर सम्मान किया। पूर्व राजस्व मंत्री बायतु विधायक हरीश चौधरी ने संबोधित करते हुए कहा हमारे युवाओं ने जीवन जीने के लिए बहुत विकट परिस्थितियों का सामना किया।

हमें जीवन और समाज के उद्धार के लिए शिक्षा और सामाजिक जागरूकता की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि धर्म और जातीय भेदभाव से लड़ने वालों से सावधान रहकर उनकी प्रार्थियों से दूर रहना होगा आपसी सौहार्द और समाज का उत्थान कैसे हो उस पर केंद्रित रहे।

कार्यक्रम में पूर्व कैबिनेट मंत्री हेमराम चौधरी, पूर्व विधायक पदमाराम मेघवाल, जिला प्रमुख महेंद्र चौधरी, सामाजिक नेता उदाराम मेघवाल, पूर्व जिलाध्यक्ष फतेह खान, धनाउ प्रभात शमा बानो, जिला परिषद सदस्य नरपतराज मूंड, ताज मोहम्मद, बशीर खान आदि मौजूद थे।

जालोर की बेटी ने वूशु में कांस्य पदक जीता

जालोर, (नि.सं.)। बांग्लादेश के ढाका शहर में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय वूशु प्रतियोगिता में जालोर की छवि पुरी विनोद चौधरी ने देश का परचम फुराने हुए कांस्य पदक अपने नाम किया।

जिला वूशु संघ के महासचिव कन्हैयालाल मिश्रा ने बताया कि 1 से 4 अक्टूबर तक बांग्लादेश के ढाका शहर में प्रथम साउथ एशियन स्कूल कॉम्बेट गेम का आयोजन हुआ।उक्त प्रतियोगिता में छवि चौधरी ने बेहतरीन खेल कौशल का प्रदर्शन करते हुए देश के लिए कांस्य तमगा हासिल किया।वाताते चर्च की छवि ने इससे पूर्व गतवर्ष स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा रांची,झारखंड में 67वीं राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिता के तहत आयोजित वूशु खेल में राजस्थान के लिए स्वर्ण पदक हासिल किया था।इस बार भी इस होनहार वूशु खिलाड़ी ने जैसलमेर के चौहटन में 26 सितम्बर से आयोजित हुई 68 वीं राज्य स्तरीय प्रशिक्षण ले रही है। छवि चौधरी की उपलब्धि पर भारतीय वूशु कोच राजेश कुमार टेलर, राजस्थान वूशु संघ के अध्यक्ष हीरानंद कटारिया, जिला वूशु संघ के संरक्षक दलपत सिंह आर्य, अध्यक्ष शिवदत्त आर्य, कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश खंडेलवाल, जिला



ढाका में जालोर की छवि ने कांस्य पदक जीता

फोटो-राष्ट्रदूत

प्रितमसिंह राठीड के निर्देशन में वूशु का प्रशिक्षण ले रही है। छवि चौधरी की उपलब्धि पर भारतीय वूशु कोच राजेश कुमार टेलर, राजस्थान वूशु संघ के अध्यक्ष हीरानंद कटारिया, जिला वूशु संघ के संरक्षक दलपत सिंह आर्य, अध्यक्ष शिवदत्त आर्य, कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश खंडेलवाल, जिला

तौरदाजी संघ अध्यक्ष कृष्ण कुमारी, सचिव वरुण शर्मा, जिला पावर लिफ्टिंग संघ अध्यक्ष प्रशान्त सिंह, सचिव कालिलाल आर्य, विनोद आर्य, अंबिका प्रसाद तिवारी, जगदीश आर्य, छगन आर्य,भरत मेघवाल, छगननाथ, देवेश आर्य, कुशती संघ अध्यक्ष महेंद्र मुनोत बादि ने खुशी जाहिर की।

जालोर शहर में शाम ढलते ही डांडिया की खनक सुनाई देती है

जालोर, (कासं)। नवरात्र के दिनों में जालोर शहर में माता को समर्पित गर्वों की धूम चल रही है। जगह-जगह विभिन्न आयोजन किये जा रहे है।

इसके अंतर्गत कहीं पर डांडिया रास का आयोजन, तो कहीं पर परंपरागत वेशभूषा, तो कहीं पर बालीवुड रास का आयोजन कर गर्वों का आयोजन किया जा रहा है। इस दौरान शहर का अति प्राचीन व पुरातन चामुंडा माता मंदिर, सिरें मंदिर रोड शीतला माता मंदिर व कालका माता मंदिर प्रांगण में परंपरागत तरिके से देवी-देवताओं के स्वांग में नृत्य का आयोजन किया जा रहा है। कई जगहों पर बालीवुड डांडिया व गुजराती गर्वों पर भी नृत्य किया जा रहा है।

जालोर शहर के सिन्धी कॉलोनी में माता रानी भटियाणी, सुन्देलाव तालाब किनारे चामुण्डा माता मंदिर, बापू नगर कॉलोनी, सिरें मंदिर रोड पर स्थित ब्राम्हणी माता मंदिर बोल्डी, शास्त्री नगर कॉलोनी, लेटा रेलवे फाटक क्षेमकरी माता मंदिर, मुख्य बाजार सरावास, राव समाज मंदिर व आशापूर्णा कॉलोनी सहित कई जगह गर्वा महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

जालोर शहर के सिन्धी कॉलोनी में डांडिया रास की धूम मचने लगी है। अध्यक्ष किशन आडवानी ने बताया कि गर्वा कार्यक्रम के दौरान अलग-अलग रूप में बच्चों, युवाओं और युवतियों द्वारा विभिन्न प्रस्तुतियों दी जा रही है। जिसमें गुजराती, राजस्थानी और भक्ति गानों पर एकल, युगल व समूहिक नृत्यों की प्रस्तुतियां दी जा रही है।



जालोर शहर के सिन्धी कॉलोनी में डांडिया की धूम मची।

फोटो-राष्ट्रदूत

कार्यक्रम के दौरान गर्वा मंडल के उपाध्यक्ष मेहुल रामावत, कोषाध्यक्ष अरविन्द सोनी, सह कोषाध्यक्ष गोपाल सोनी, सचिव धीरज सोनी, सह सचिव मनोज सोनी, चेतन सोनी, अंकुश सोनी, मनिष टाकुर, दिलीप सिन्धी, हितेश सोनी, मनोज रामावत, श्रवण भाई सोनी, कन्हैयालाल सोनी, विरेन्द्र पुरी, मनोज भाई सिन्धी, प्रकाश भाई सोनी, रमेश भाई राजपुरोहित, वरिष्ठ कार्यकर्ता सत्यप्रकाश रामावत, रणछोड पुरी, पुरुषोत्तम पोमल, भेरूलाल सोनी,

शंकर माली, अशोक जडीया, घेवर सोनी, विष्णु आडवानी, पुजारी रामपुरी सेवा दे रहे है। इस दौरान दर्शनार्थियों के लिए चाय पानी व बैठने की व्यवस्था की गई है। पाली संवादादता के अनुसार: शारदीय नवरात्रि के तीसरे दिन अब धीरे-धीरे पाली शहर के गली मोहल्ले में गर्वा डांडिया रास की खनक नजर आने लगी है। शाम होते ही विभिन्न रंग बिरंगी गुजराती पोशाक पहन कर युवक,

युवतियां गर्वा नृत्य करने पहुंचती है। इसी क्रम में रविवार को भैरूघाट स्थित भलावलों का बास में बीकेबी क्लब की ओर से रंगारंग डीजे पर मोहल्ले की महिला युवतियों ने जमकर डांडिया नृत्य में भाग लिया।

रोजाना रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक गर्वा नृत्य होगा। निर्मल भाटी तरुण बोरणा, शुभम देवडा, सुमित टांक, अजय सोलंकी, सीपी बोरणा गोविंद सांखला,पंकज सोलंकी गौरव शर्मा आदि का सहयोग रहा।

सार-समाचार

शिक्षक विश्वनोई को सम्मानित किया

धोरीमन्ना, (नि.सं)। शिक्षक हमारे जीवन के मार्गदर्शक होते है शिक्षक वह दीपक है जो अज्ञानता के अंधकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश फैलाते है।वे हमें न केवल कितानों का ज्ञान देते है बल्कि जीवन की मूलभूत सीख भी सिखाते है। वे हमें आत्मनिर्भर, जिम्मेदार और नैतिक रूप से सशक्त भी बनाते है। ऐसे शिक्षकों का सम्मान करने के लिए टीम बाडमेर ने रविवार को होटल कैलाश इंटरनेशनल में बाडमेर शिक्षक गौरव सम्मान 2024 का आयोजन किया। जिसमें धोरीमन्ना उपखण्ड की राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पाबूबरे में कार्यरत स्टेट अर्वाडी शिक्षक जगदीश प्रसाद विश्वनोई को विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास व विद्यालय विकास में समय-समय पर बेहतरीन योगदान देने पर प्रशस्ति पत्र,समृति चिह्न व शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया। प्रात जानकारी के अनुसार कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व केन्द्रीय मंत्री कैलाश चौधरी ने बताया कि शिक्षक राष्ट्र के निर्माता होते है।शिक्षक ही ज्ञान व सफलता का पहला आधार है जिसकी अनुपस्थिति में सफल जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है।शिक्षक ही हमारी सफलता की मजबूत नींव है। विद्यार्थी जीवन में शिक्षक का अत्यधिक महत्व होता है क्योंकि शिक्षक ही हमारे ज्ञान और जीवन मूल्यों के आधार है। पुरस्कृत शिक्षक फोरम राजस्थान के महासचिव रामेश्वर प्रसाद ने कहा कि स्टेट अर्वाडी शिक्षक विश्वनोई को बाडमेर शिक्षक गौरव सम्मान मिलने पर हम सबको गर्व है कि आपने निस्वार्थ भाव से सेवा करते हुए हर क्षेत्र कई उपलब्धियां हासिल की है। पुरस्कृत शिक्षक फोरम जिला शाखा बाडमेर-बालोतरा के जिला अध्यक्ष सालगराम परिहार ने शिक्षक विश्वनोई को बधाई देते हुए टीम बाडमेर का आभार जताया।

जोधपुर ने तैराकी में 17 पदक जीते

जोधपुर, (कासं)। मगलवाड चित्तौडगढ में 68 वीं राज्य स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता में 17/19 वर्ष छात्र/छात्रा पर्ग में जोधपुर के कुल 17 तैराकों ने भाग लिया। 13 मेडल जोधपुर शहर के खाते में आए, जिनमें 3 गोल्ड, 2 सिल्वर, 8 ब्रॉज प्राप्त किये। प्रात जानकारी के अनुसार दलाधिपति टीकमचंद सियाग, टीम प्रभारी आशीष राणा, जिला संयोजक प्रधानाचार्य चन्द्रशेखर दवे ने बताया कि वरिष्ठ शारीरिक शिक्षिका पुष्पा गहलोत के नेतृत्व में 68 वीं राज्य स्तरीय तैराकी प्रतियोगिता में जोधपुर शहर की टीम ने बहुत शानदार प्रदर्शन किया, जिसमें 19 वर्ष आयु वर्ग में भाग लेने गई सभी बेटियों ने मेडल जीते। कृष्णा सियाग ने 200 मीटर आई एम व्यक्तिगत स्पर्धवा में गोल्ड मेडल, 50 मीटर बटपरफ्लाई, 50 मीटर बैक स्ट्रोक में सिल्वर मेडल जीता। मिताली चौधरी ने 200 मीटर और 100 मीटर बटरफ्लाई दोनों में गोल्ड मेडल, प्रियंका कच्छवाहा ने 200 मीटर व 50 मीटर बैक स्ट्रोक में ब्रॉज मेडल जीता। 4 100 मेटले रिले में राजशी, प्रियंका, कृष्णा, मिताली ने ब्रॉज मेडल प्राप्त किया। 19 वर्ष छात्र वर्ग में उमेश चौधरी ने 50 मीटर, 100 मीटर ब्रेस्ट स्ट्रोक में 2 ब्रॉज मेडल जीता, साथ ही राजनीत सांखला, नमन गहलोत, कात्यायनी निवेदी, दर्शना, आंवला, रितिका, वरिंका, आशीष, राणा, आयुष्मान, चेतन्य, भाटी, जयवंधन सोनी प्रद्युम्न सिंह, सुभद्राकुमारी आदि खिलाड़ियों ने प्रतियोगिता भाग लिया। टीम के जोधपुर पहुंचने पर उपजिला शिक्षा अधिकारी जोधपुर मंडल सुनील भाटी, शारीरिक शिक्षक संगठन के प्रदेश अध्यक्ष हापुराम चौधरी, संयोजक व प्राधिकार्य चंद्रशेखर दवे, एवं दलाधिपती टीकमचंद ने खिलाड़ियों का सम्मान किया।

नशे के विरुद्ध शपथ दिलाई, केनपन किया

पाली, (नि.सं.)। जिला मुख्यालय पर संचालित राजकीय सम्प्रेषण एवं किशोर गृह, पाली में आवसरत बालकों को नशे के विरुद्ध शपथ दिलाये जाने के साथ ही बाल गृह में सफाई अभियान में श्रमदान किया गया जिसमें बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष सूरकाश तथा परिवीक्षा एवं कारागृह कल्याण अधिकारी सुमन तथा बाल गृह का स्टॉफ उपस्थित रहा। उपनिदेशक, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, पाली ज्योति प्रकाश अरोड़ा ने बताया कि हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी समाज कल्याण सप्ताह उपलब्ध में रविवार को बाल गृह, आवासीय विद्यालय व छात्रावासों में जनचेतना दिवस के रूप में मनाया गया सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के छात्रावास व आवासिय विद्यालयों में 1500 बच्चों द्वारा आज नषा मुक्ति की शपथ ली गई। इस अवसर पर डॉ. भीमराव अणेडोंकर राजकीय आवासीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, केनपुरा में आयोजित कार्यक्रम में विद्यालय के स्टॉफ व 425 बच्चों द्वारा नषे के विरुद्ध शपथ ली गई तथा आयोजित कार्यक्रम में ब्याॉक सामाजिक सुरक्षा अधिकारी जितेन्द्र सिंह सोनीगरो द्वारा बच्चों को नषे के दुष्प्रभाव की जानकारी प्रदान करने के साथ ही नषे के विरुद्ध शपथ दिलावाई गई तथा छात्रावास अधीक्षक श्री इन्द्र सिंह द्वारा स्वास्थके के संबंध में जागरूकता उत्पन्न करने के साथ ही बच्चों में खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन करवाया गया। उक्त कार्यक्रम के अवसर पर व्याख्यता मनोज कुमार व सहायक वेलाराम व अन्य कार्मिक उपस्थित रहे।

भोजनावकाश में मौन सत्याग्रह आज

बालोतरा, (नि.सं)। शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ राजस्थान-बीकानेर जिला शाखा बालोतरा सोमवार को भोजनावकाश के दौरान शिक्षा विभागीय कार्यालयों में मौन सत्याग्रह करेगा। बालोतरा शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ महामंत्री चुनाराम चौधरी ने बताया शिक्षा मंत्री मदन दिलावर से शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ राजस्थान-बीकानेर के प्रदेशाध्यक्ष कमल नारायण आचार्य के नेतृत्व में प्रतिनिधि मंडल ने ज्ञापन सौंपकर शिक्षा सेवा के अधिकारियों को दीर्घायी सहित मांगे पूरी नहीं कर राज्य सरकार एवं शिक्षा प्रशासन शिक्षा विभाग के मंत्रालयिक स्वर्ग के हितों पर कुठाराघात कर रहा है। हाल ही में पाटय पुस्तक मंडल में मंत्रालयिक कर्मचारियों के पदों पर अध्यापकों की प्रतिनियुक्ति कर मंत्रालयिक कर्मचारियों के साथ नाईसाफी की जा रही है।इन सबके विरोध में सोमवार को कार्यालय बचाओ, शैक्षणिक स्ट्राफ हटाओ, मंत्रालयिक स्ट्राफ लगाओ एवं मंत्रालयिक स्वर्ग की रिव्यू एवं नियमित डीपीसी कराओ की मांग को लेकर ध्यानाकर्षण के रूप में शिक्षा निदेशालय परिसर में भोजनावकाश के दौरान मौन सत्याग्रह किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जिला बालोतरा के शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी/अधिकारीगण भी अपने कार्यालयों में भोजनावकाश के समय मौन धारण कर सत्याग्रह करेंगे।

फलोदी में डीजल चोर गैंग सक्रिय

जोधपुर, (कासं)। फलोदी जिले में सड़क पर खड़ी गाड़ियों से डीजल चुराने वाली गैंग सक्रिय है। ये गैंग इतनी शक्तिर है कि महज कुछ ही देर में टंकी से पूरा डीजल निकालकर ले जाती है। टुक जब स्टार्ट नहीं होता है तब चालक को पता चलता है कि उसकी गाड़ी से डीजल चोरी हो चुका है। इसको लेकर पता हाई एक मामला फलोदी जिले के मतोडा थाने में दर्ज हुआ है। थाने में हरिदास वैष्णव निवासी बेलवा ने रिपोर्ट देकर बताया कि वो टुक चलाने का काम करते हैं। रात्रि के समय उन्होंने एक पेट्रोल पंप पर टुक को डीजल भरवा कर खड़ा किया था। रात के समय एक रिवपट गाड़ी आई उन्होंने उनकी गाड़ियों से डीजल निकाल दिया। टुक मालिक गोपाराम ने बताया की उनके पत्थर ढूढाई के टुक हैं। जो रात के समय पेट्रोल पंप पर खड़े किए थे। रात को दोनों गाड़ियों से 195 लीटर डीजल निकाल कर रिवपट गाड़ी में सवार बदमाश चले गए। इसका सीसीटीवी फुटेज भी पेट्रोल पंप पर लगे कैमरे में कैद हो गया। गोपाराम ने बताया कि यह गैंग पिछले करीब तीन माह से एक्टिव है। जो रात के समय आराम करने वाले टुक चालकों के टुक से डीजल चुराकर भाग जाती है। फिलहाल पुलिस सीसीटीवी के आधार पर कार सवार बदमाशों का पता लगाने में जुटी हुई है।

जयंत चौधरी ने लोकार्पण किया

जोधपुर, (नि.सं.)। कौशल विकास और उद्यमता मंत्रालय में केंद्रीय राज्य मंत्री(स्वतंत्र प्रभार) और शिक्षा राज्य मंत्री जयंत चौधरी ने आज जोधपुर के किसान तेजा रामगढ़ी शिक्षण संस्थान और नवीन भवन का निरीक्षण किया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जयंत चौधरी ने कहा कि बच्चों को शिक्षा के लिए समुचित सुविधाएं दी जानी चाहिए। जोधपुर शिक्षा का हब है और यहां आईआईटी, एफडीडीआई, एनएसटीआई आदि संस्थान हैं। उन्होंने कहा कि आज गांवों में भी सड़क, स्कूल के साथ खेल के लिए निधि गांवों के नौजवानों के लिए दी जा रही है। जयंत चौधरी ने कहा कि युवा खेलों में जीत के साथ हारने से सीखें और आगे बढ़ें। उन्होंने कहा कि बच्चों में आत्मविश्वास और टीमवर्क की भावना जागृत करें जिससे आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त कर सकें। उन्होंने संस्थान को मस्टीस्पोर्ट्स के लिए 2.5 लाख रुपए की घोषणा की। चौधरी ने कहा कि पीएम विश्वकर्मा योजना के अंतर्गत मंत्रालय कार्य कर रहे हैं और 9000 बच्चों में पीएम विश्वकर्मा योजना में रजिस्ट्रेशन करवाया है। इस अवसर पर किसान तेजा रामगढ़ी शिक्षण संस्थान के सदस्य, विद्यार्थी व अन्य अतिथि मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री ने विभागीय प्री समिट आयोजनों की समीक्षा की

भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्री समिट तैयारियों से राजिगं राजस्थान को मजबूती मिलेगी

जयपुर, 6 अक्टूबर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राजिगं राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट-2024 से राजस्थान का विकास तीव्र गति से होगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के प्रथम वर्ष में ही इस समिट के आयोजन से प्रदेश में औद्योगिक विकास का विस्तार होगा और युवाओं को रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होंगे। उन्होंने निवेश से संबंधित एमओयू को समय से धरातल पर उतारने के निर्देश देते हुए कहा कि छोटे निवेशों को भी तरजीह दी जाए।

मुख्यमंत्री ने रविवार को मुख्यमंत्री आवास पर राजिगं राजस्थान समिट के तहत विभागीय स्तर पर होने वाली प्री समिट आयोजन की तैयारियों की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता की।

उन्होंने कहा कि पॉलिसी निर्माण का कार्य संबंधित विभाग गहन विश्लेषण करके पूरा करें, जिससे पॉलिसी सरल, स्पष्ट और गुणवत्तापूर्ण बने एवं इससे निवेशकों को निवेश करने में आसानी हो। समिट की तैयारियों के क्रम में ब्रोशर, प्रैजेंटेशन, ऑडियो-वीडियो फिल्में, स्पीच,

मुख्यमंत्री ने विभागों को सरल व स्पष्ट पॉलिसी बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने विभागों से प्री समिट में कॉर्पोरेट्स, व्यापार संघों, सी.ई.ओ., शोधकर्ताओं व विशेषज्ञों को आमंत्रित करने के लिए कहा।

टाँकिंग पॉइंट, विभागीय नीतियों का सारांश तैयार करने जैसे काम विभाग समय रहते पूरा कर लें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि, विभागीय समिट का स्थान, ब्रांडिंग, डेलीगेट एवं वक्ताओं का चयन तथा प्रोग्राम का शेड्यूल निर्धारित कर प्री समिट का सफल आयोजन सुनिश्चित किया जाए। सभी विभाग प्री समिट में प्रमुख कॉर्पोरेट्स, व्यापार संघों, सीईओ, शोधकर्ताओं और विशेषज्ञों को भी आमंत्रित करें। उन्होंने कहा कि विभागीय पीआरओ मीडिया मैनेजमेंट, मीडिया कवरेज, प्रेस रिलीज, मीडिया इंटरव्यू, सोशल मीडिया पोस्ट, पोस्ट वेंचर कवरेज आदि के लिए डीआईपीआर के साथ समन्वय स्थापित कर कार्य करें। प्री समिट आयोजन के पश्चात मुख्य गतिविधियों की रिपोर्ट मुख्यमंत्री कार्यालय एवं उद्योग विभाग में प्रस्तुत की जाए।

शर्मा ने कहा कि 9 से 11 दिसंबर तक आयोजित होने वाले राजिगं राजस्थान समिट को महत्वपूर्ण विभागों की प्री समिट के आयोजन से मजबूती मिलेगी।

उन्होंने पर्यटन विभाग को निर्देश दिया कि नवीन पर्यटन नीति के माध्यम से राजस्थान की पर्यटन अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाया जाए। इसके लिए नीति निर्माण में पर्यटन से संबंधित सभी पहलुओं और हितधारकों का पूर्ण ध्यान रखा जाए। उन्होंने एक जिला-एक उत्पाद, एक जिला-एक डेस्टिनेशन को बढ़ावा देने के लिए समुचित प्रयास करने के निर्देश दिए। राज्य में वाइल्डलाईफ, डेजर्ट और धार्मिक पर्यटन को बढ़ाने के लिए उन्होंने विशेष कार्ययोजना बनाने के लिए निर्देशित किया।

शर्मा ने कहा कि राजस्थान खनिज संपदा की उपलब्धता के क्षेत्र में देश के

प्रमुख राज्यों में से एक है। प्रदेश में उपलब्ध खनिजों की जिलेवार सूची बनाई जाए और विभागीय वेबसाइट के माध्यम से एवं बुकलेट के जरिए इनका विपणन कार्य किया जाए।

मुख्यमंत्री ने सभी विभागों को निर्देश दिए कि अधिक से अधिक संख्या में प्रदेश में निवेश लाएं तथा राजिगं राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट-2024, के माध्यम से प्रदेश को नई औद्योगिक ऊंचाईयों तक पहुंचाए। जिससे प्रदेश की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ बने।

इस अवसर पर अतिरिक्त मुख्य सचिव जल संसाधन अभय कुमार, अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय शिखर अग्रवाल, प्रमुख शासन सचिव उद्योग अजिताभ शर्मा, प्रमुख शासन सचिव स्वायत्त शासन राजेश कुमार यादव, प्रमुख शासन सचिव नगरीय विकास वैभव गालरिया सहित विभिन्न विभागों के शासन सचिव मौजूद रहे एवं वीसी के माध्यम से बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव ऊर्जा आलोक सहित प्रमुख विभागों के शासन सचिव भी जुड़े।

मेघालय में बाढ़ से मरने वालों की संख्या 15 हुई

शिलांग, 06 अक्टूबर। मेघालय में बाढ़ और भूस्खलन में मरने वालों की संख्या बढ़ कर 15 हो गई है। अधिकारियों ने रविवार को पांच और मौतों की सूचना दी।

अधिकारियों ने कहा कि राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (एस.डी.आर. एफ.) ने रविवार को पश्चिम गारो हिल्स जिले में बाढ़ के पानी से पिता-पुत्र के शव निकाले, जबकि एक मां-पुत्री के शव भूस्खलन से बरामद किए। इसके अलावा पूर्वी गारो हिल्स जिले में शनिवार देर रात एक कार पर पेड़ गिरने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। अधिकारियों ने कहा कि पिता-पुत्र की पहचान बिजाँय

अधिकारियों के अनुसार रविवार को बाढ़ व भू-स्खलन में 5 की मृत्यु हुई।

एस संगमा (44) और वियान शिकागो आर मारक (14) के रूप में हुई है, जिनका वाहन पश्चिम बंगाल पंचोत्तरण संख्या डब्ल्यूबी 06 7718 शुक्रवार को बाढ़ के पानी के तेज बहाव में बह गया था। पांच और छह अक्टूबर को ईस्ट गारो हिल्स में तीन मौतें हुईं। अधिकारियों ने बताया कि रविवार को समुदाय की मदद से एसडीआरएफ टीम ने ईस्ट जैतिक हिल्स जिले के रोंगजेंग गोंगडोप में भूस्खलन से अमेरिन के मारक और उनकी पुत्री मनसे के मारक के शव बरामद किए हैं, जबकि थिबावार के तेंगसंग मारक की शनिवार रात पेड़ गिरने से मौत हो गई।

लालसोट में डंपर ने बाइक सवारों को कुचला, 5 की मौत

रविवार को लालसोट के बस स्टेण्ड पर ब्रेक फेल डम्पर ने 15 को चपेट में लिया

दौसा, 06 अक्टूबर (निस)। लालसोट के बस स्टैंड पर रविवार को एक भीषण हादसा हुआ, जिसमें तेज रफ्तार डंपर ने कई बाइक सवारों को कुचल दिया। इस दर्दनाक दुर्घटना में 5 लोगों की मौत पर ही मौत हो गई। प्रारंभिक जांच में पता चला है कि डंपर के ब्रेक फेल होने के कारण यह हादसा हुआ। अस्पताल सूत्रों के अनुसार, दोनों वाहनों के नीचे दबे हुए करीब 15 लोगों को बचाने के लिए क्रेन की मदद ली गई। घायलों में 10 गंभीर रूप से घायल व्यक्तियों को लालसोट और दौसा के जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। डॉक्टर सीताराम मोघा ने जानकारी दी कि 15 लोगों को अस्पताल लाया गया था, जिनमें से 4 को पहले ही मौत हो चुकी थी। इलाज के दौरान एक और व्यक्ति की मौत हो गई। मृतकों में 14 साल की लक्ष्मी महावर और 33 साल के रोडव (गंडालाल के पुत्र) को पहचान हुई है।

घायलों की सूची में बिरमा (45) पत्नी जगदीश, अर्चना (35), हाकिम

इस दुर्घटना में 5 लोगों की दुर्घटना स्थल पर ही मौत हो गयी। गम्भीर रूप से घायल 10 व्यक्तियों का लालसोट व दौसा के जिला अस्पताल में इलाज चल रहा है।

सिंह (60), छाजुसिंह, गोल् (14) पुत्र लल्लू महावर, मानसिंह (14) पुत्र बजरंग, उर्मिला (40) पत्नी शंभूदयाल, पूजा (30), अशोक (33) पुत्र जैनेंद्र, और कस्तूरी (34) पत्नी रामकूल शामिल हैं। इन्हें दौसा और अन्य अस्पतालों में रैफर किया गया है।

स्थानीय पीसीसी मेंबर कमल मोघा ने इस हादसे के लिए पुलिस-प्रशासन को जिम्मेदार ठहराया है। उन्होंने कहा कि भारी वाहनों की नो एंट्री के बावजूद बजरी से भरे डंपर भीड़-भीड़ वाले इलाकों में प्रवेश कर रहे हैं। तीन दिन पहले

लालसोट के व्यापारी इसी समस्या को लेकर धरने पर बैठे थे, लेकिन प्रशासन ने उनकी आवाज को अनसुना कर दिया।

राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने दौसा जिले के लालसोट में हुए भीषण सड़क हादसे पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने ईश्वर से मृतकों की पुण्यात्मा की शांति और शोक संतप्त परिजनों को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की कामना की है। उन्होंने हादसे में घायलों के जल्द स्वस्थ होने की भी कामना की है।

लालू, तेजस्वी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) प्रदेश के जबलपुर में स्थित रेलवे के पश्चिम मध्य क्षेत्र में गुप्त-डी की नियुक्तियों से संबंधित है। ईडी के मुताबिक राजद प्रमुख के परिचार या सहयोगियों को हस्तांतरित की गई या तोहफे में दी गई जमीन के बदले ये नियुक्तियों की गईं। अदालत ने इस मामले में सभी आठ आरोपियों को समन भेजा था।

मोदी सरकार ने 10 साल में रेलवे का

बंटवारा कर दिया-लालू

नई दिल्ली, 6 अक्टूबर। यादव ने रविवार को सोशल मीडिया पर पोस्ट के माध्यम से पिछले 10 वर्षों के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शासनकाल में, रेलवे द्वारा आम लोगों का शोषण करने और रेलवे को घाटे में ले जाने का आरोप लगाया। उन्होंने बताया है कि कैसे प्रधानमंत्री मोदी के 10 वर्षों के शासन में देश में रेलवे की सेवाएं आम लोगों के लिए दुष्कर हो गई हैं।

राजद अध्यक्ष ने कहा, 10 वर्षों में मोदी की अगुवाई वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार ने रेल का किराया बढ़ा दिया, प्लेटफार्म टिकट का दाम बढ़ा दिया, स्टेशन बेच दिए, जनरल बोगियां घटा दीं, बुजुर्गों को मिलने वाला लाभ खत्म कर दिया। उन्होंने कहा, सेफ्टी-सिक्यूरिटी घटाने पर रोज हादसे हो रहे हैं फिर भी कहते हैं रेलवे घाटे में है। अब ये कहें रेल की पटरियां ना बेच दें। लालू ने कहा, उनके रेल मंत्री रहने के दौरान रेलवे में जहां एक ओर किफायती किराए वाली गरीब रथ जैसे सेवायुक्तित्व देते गरीब

कांग्रेस-एन.सी. अलायंस में आने को तैयार पी.डी.पी.

नैशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष फारुक अब्दुल्ला ने पी.डी.पी. के निर्णय पर खुशी जताई

जम्मू-कश्मीर, 06 अक्टूबर। विधायकसभा चुनाव के एग्रीजेंट पोल जारी होने के बाद नेशनल कॉन्फ्रेंस (एन.सी.) के प्रेसिडेंट फारुक अब्दुल्ला ने खुशी जताई है कि एन.सी. और कांग्रेस मिलकर सरकार बनाते दिख रहे हैं। उन्होंने कहा कि पी.डी.पी. हमसे जुड़ने के लिए तैयार है, ये बेहद अच्छी बात है।

दरअसल, एग्रीजेंट पोल सामने आने के बाद पी.डी.पी. नेता जुहेब युसुफ मीर ने बयान दिया कि भाजपा को सत्ता से बाहर रखने के लिए वे नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस के साथ गठबंधन करने को तैयार हैं।

शनिवार को एग्रीजेंट पोलों में से आधे एन.सी.-कांग्रेस को बहुमत दे रहे हैं तथा आठवें उसे बहुमत से कुछ दूर बता रहे हैं। पी.डी.पी. के निर्णय से एन.सी.-कांग्रेस गठबन्धन मजबूत होगा।

पी.डी.पी. नेता के इस बयान को लेकर फारुक अब्दुल्ला ने कहा, उन्हें

बधाई हो। उनकी सोच अच्छी है, हम सभी एक राह पर हैं। नभरत को हमें खत्म करना है और जम्मू-कश्मीर को इकट्ठा रखना है।

शनिवार को जारी हुए एग्रीजेंट पोल में एन.सी.-कांग्रेस की सरकार बनती नजर आ रही है। 10 पोल में से 5 एग्रीजेंट पोल्स नेशनल कॉन्फ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन की सरकार बना रहे हैं, जबकि 5 में वह बहुमत से 10 से 15 सीटें दूर दिख रही हैं।

पार्टी को 40 सीटें मिलने का अनुमान है। भाजपा 30 सीटें ला सकती है। पी.डी.पी. और अन्य की 10-10 सीटें आएंगी।

मुख्यमंत्री ने ..

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

महाराज ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की शाकाहारी जीवन पद्धति का उल्लेख करते हुए सरहना की। साथ ही, मुनि पावन सागर महाराज, मुनि तत्वरूचि महाराज, मुनि सन्यक रत्न विजय महाराज, साध्वी श्रुत दर्शना श्री जी ने भी आशीर्चन दिया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने जैन मुनियों को जैन शास्त्र भेंट किए। इस दौरान उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री कन्हैया लाल, सहकारिता राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक, गृह राज्यमंत्री जवाहर सिंह बेदम, महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री डॉ. मंजू बाबयार, सांसद मदन राठीड, मंजू शर्मा, विधायक कालीचरण सर्राफ, जयपुर नगर निगम हेरिटेज महापौर कुसुम यादव, उप महापौर पुनीत कर्णवट सहित बड़ी संख्या में जैन समाज के प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

धर्मशाला में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मिली। इस दौरान एनएसजी और पुलिस तथा अन्य जांच एजेंसियों के अधिकारी मौके पर मौजूद रहे।

भोपाल के कारखाने से करोड़ों रुपये का मादक पदार्थ जब्त

गुजरात पुलिस तथा एन.सी.बी. की इस कार्यवाही से मध्यप्रदेश पुलिस अनभिज्ञ थी

भोपाल, गांधीनगर, 06 अक्टूबर। गुजरात के गृह राज्य मंत्री हर्ष संघवी ने गुजरात पुलिस और मादक पदार्थ नियंत्रक ब्यूरो (एन.सी.बी.) के एक संयुक्त अभियान के तहत मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के एक कारखाने से करोड़ों रुपए मूल्य के मादक पदार्थ जब्त किए जाने का खुलासा किया है।

मंत्री के इस खुलासे के बाद समूचे अभियान से लगभग अंजान रही मध्यप्रदेश पुलिस में हड़कंप मच गया है। बताया जा रहा है कि मध्यप्रदेश पुलिस को मंत्री की इस पोस्ट के बाद ही इस मामले के बारे में जानकारी हासिल हुई है।

मंत्री संघवी ने रविवार दोपहर

गुजरात के गृह राज्य मंत्री के सोशल मीडिया पोस्ट के बाद मध्यप्रदेश पुलिस को इस संयुक्त अभियान की जानकारी मिली।

अपनी एक्स पोस्ट में जानकारी दी कि गुजरात आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) और मादक पदार्थ नियंत्रक ब्यूरो, दिल्ली, ने अपने संयुक्त अभियान में मादक पदार्थों के खिलाफ बड़ी जीत हासिल की है। हाल ही में इन दोनों एजेंसियों ने एक संयुक्त अभियान के तहत भोपाल में एक कारखाने पर

छापामार कार्रवाई की, जिसके बाद वहां से लगभग एक हजार 814 करोड़ रुपए मूल्य की एमडी (एक प्रकार का मादक पदार्थ) और उसके निर्माण में उपयोग आने वाला सामान जब्त किया गया। उन्होंने इस संयुक्त अभियान के लिए इन दोनों एजेंसियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि ये भारत को सुरक्षित और स्वस्थ बनाने की दिशा में एक अहम कदम है।

इसी बीच इस खुलासे के बाद मध्यप्रदेश पुलिस में हड़कंप की स्थिति है। इस पोस्ट के बाद मध्यप्रदेश पुलिस को सोशल मीडिया पर जम किया जा रहा है।

नेपाल में मरने वालों की संख्या 244 पहुंची

काठमांडू, 06 अक्टूबर। नेपाल में हाल ही में आई बाढ़ और भूस्खलन से मरने वालों की संख्या 244 तक पहुंच गई है, जबकि 19 लोग अभी भी लापता हैं और 179 घायल हुए हैं।

गृह मंत्रालय के प्रवक्ता ऋषिराम तिवारी ने रविवार को बताया कि प्रभावित क्षेत्रों से 17,174 लोगों को बचाया गया है और बाधित राजमार्गों को बहाल करने तथा राहत पहुंचाने के प्रयास जारी हैं। उन्होंने कहा, "सरकार स्थानीय स्तर पर पीड़ितों का विवरण एकत्र कर रही है और सत्यापन के बाद अस्थायी आवास के लिए सहायता वितरित की जाएगी। स्थानीय अधिकारियों ने पहले ही प्रभावित परिवारों को भोजन और अन्य आवश्यक चीजें उपलब्ध करा दी हैं।"

काठमांडू पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार सरकार ने जिला आपदा प्रबंधन कोष के माध्यम से मृतकों के परिवारों को 200,000 रुपये प्रदान किए हैं, जिसमें 160 परिवारों को अब तक सहायता मिल चुकी है।

स्त्री-2 कोरियोग्राफर जानी मास्टर से नेशनल अवॉर्ड वापस लिया

उनकी असिस्टेंट ने उनके खिलाफ यौन शोषण की एफ.आई.आर. दर्ज करायी थी

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने आरोपी जानी मास्टर से बेस्ट कोरियोग्राफर का नेशनल अवॉर्ड वापस लेने की घोषणा की।

उन्होंने चेन्नई, मुंबई और हैदराबाद में अलग-अलग प्रोजेक्ट्स की शूटिंग के दौरान उसका यौन शोषण किया। साथ ही हैदराबाद स्थित अपने घर पर भी उसे कई बार अश्लील किया।

लड़की ने अपनी शिकायत में बताया कि साल 2017 में एक इवेंट में उसकी मुलाकात जानी मास्टर से हुई थी। दो साल बाद जानी ने उसे अपनी

असिस्टेंट कोरियोग्राफर की जाँच ऑफर की, जो उसने मंजूर कर ली।

इसके बाद मुंबई में हुए एक शो के दौरान जानी ने होटल में उसे सेक्सुअली हैरस किया। लड़की का आरोप है कि इसके बाद जानी लगातार डरा-धमकाकर उसका शोषण करते रहे। वे उस पर लगातार शादी का दबाव बना रहे थे। इतना ही नहीं, वे एक बार उसे अपने घर भी ले गए जहां जानी और उनकी पत्नी (आयशा) ने उसके साथ मारपीट की।

यह मामला सबसे पहले तेलंगाना वुमन सेफ्टी विंग की डीजी शिखा गोयल ने उठाया था। उन्होंने ही पीड़ित को पुलिस कम्प्लेन करने का सुझाव दिया था। जानी इससे पहले भी 2015 में एक

विवाद के चलते छह महीनों के लिए जेल जा चुके हैं।

मैनपुरी जिला...

(प्रथम पृष्ठ का शेष) कैदियों के साथ बैरक के बाहर बैठी हुई थी। अचानक वह टॉयलेट गई और टॉयलेट में साड़ी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। जब महिला कैदियों को बहुत देर तक लाती दिखाई नहीं दी तो उन्होंने टॉयलेट का दरवाजा खोला। जहां लाली मृत अवस्था में लटकी मिली। जिला जेल के कार्मियों ने लाली को आनन-फानन में अस्पताल पहुंचाया, परंतु डाक्टरों ने उसे मृत्यु घोषित कर दिया।

खामनोई के राइट हैंड कमांडर कानी के लापता होने की खबर

कासिम सुलेमानी की मौत के बाद जनरल कानी ईरान के सबसे ताकतवर व्यक्ति माने जाते थे

वर्ष 2020 में सुलेमानी की हत्या के बाद कानी को उनका उत्तराधिकारी बनाया गया था।

नियुक्त किया गया था और वह ईरान की सैन्य रणनीति बनाने वालों में से एक रहे हैं।

कानी के लापता होने से ईरान में तनाव बढ़ सकता है। न्यूयार्क पोस्ट की रिपोर्ट के मुताबिक, ईरान के शीर्ष अधिकारियों को भी इस बात की खबर नहीं है कि इस्माइल कानी कहाँ हैं और उनके साथ क्या घटित हुआ है। गुरवार से उससे किसी तरह का संपर्क नहीं हुआ है। इस्माइल कानी कितना अहम हैं, इस बात का अंदाजा ऐसे लगा सकते हैं कि वह लेबनान में हतिभूतल्लाह को हर तरह से सपोर्ट कर

रहा था। जानकार मानते हैं कि अगर कानी मारा जाता है तो ईरान की ताकत पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ेगा क्योंकि कानी ईरान के लिए हफ्ता भर अहम हैं। इजरायल पर हमला करने से लेकर हजिबुल्लाह और हमास को सपोर्ट करने और उन्हें हथियार मुहैया कराने तक में इस्माइल की भूमिका अहम रही है।

कहा जाता है कि अयातुल्लाह खामनेई अपने निर्देशों को इस्माइल कानी के जरिए दिलवाता था और कानी ही यमन में हूती और इराक की मिलिशिया के अलावा मिडिल ईस्ट में आतंकी समूहों से बात करता है।

रेल मंत्री ने नमो भारत सेमी हाई-स्पीड ट्रेनों की घोषणा की

बेंगलूर, 06 अक्टूबर। रेलवे मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बेंगलूर की यातायात समस्याओं को कम करने और क्षेत्रीय संपर्क में सुधार करने के लिए नमो भारत सेमी-हाई-स्पीड ट्रेनों की शुरुआत करने की घोषणा की है।

वैष्णव ने शनिवार को यहां संवाददाताओं से कहा कि बेंगलूर स्थित भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड (बीईएमएल) में निर्माणधीन ये ट्रेनें जल्द ही बेंगलूर से तुमकुरु और मैसूर तक के मार्गों पर संचालित होंगी, जिससे शहरों के बीच यात्रा का समय काफी कम हो जाएगा।

उन्होंने वंदे भारत एक्सप्रेस की उल्लेखनीय सफलता को रेखांकित किया, जिसमें बेंगलूर से चेन्नई, मद्रुई और हैदराबाद तक के मार्गों पर 100

बेंगलूर स्थित भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड में निर्माणधीन ये ट्रेनें जल्द ही संचालित होंगी।

प्रतिशत से अधिक यात्री भार दर्ज किया गया है। इसे साफ है कि राज्य में तेज और निर्माणधीन के लिए का मांग है।

वैष्णव ने कहा, "नमो भारत ट्रेनें किफायती किराए पर विद्युत्संरयी अनुभव प्रदान करेंगी, विशेष रूप से मध्यम वर्ग के यात्रियों के लिए अधिकतम आराम और सुरक्षा सुनिश्चित करेंगी। नयी ट्रेनें उन्नत सुरक्षा सुविधाओं से लैस होंगी। क्वच प्रणाली, किसी भी आसन्न खरबे के

बारे में ड्राइवर को सचेत करने के लिए डिज़ाइन की गई है।"

बेंगलूर में ट्रेन सेवाओं को हवाई यात्रा के साथ बेहतर ढंग से जोड़ने की योजना है। रेलवे मंत्रालय, बेंगलूर हवाई अड्डा प्राधिकरण के साथ मिलकर हवाई अड्डे के टर्मिनलों के साथ रेलवे लाइन को बढ़ाने पर काम कर रहा है, जिससे हवाई यात्रियों के लिए सुगम यात्रा सुनिश्चित हो सकेगी। बेंगलूर रेलवे स्टेशन और येलहंका के बीच मौजूदा एकल रेल लाइन को दोहरी लाइन में परिवर्तित किया जा रहा है, ताकि बढ़ती यात्री संख्या की जरूरतों को पूरा किया जा सके।

वैष्णव ने कहा कि इसके अलावा, बेंगलूर के केन्टोन्मेंट स्टेशन का पुनर्विकास किया जा रहा है।